६० वर्षों से ज्ञान-विज्ञान तथा मनोविनोद को प्रकीर्ण करनेवाली विशिष्ट पत्रिका

TEST YOUR IQ
Who is an officer empowered to authenticate or attest documents?
What is the official name of the Birla Planetariun in Chennai?
If the collective noun of fish is a school, what is the equivalent for jellyfish?
Pandas live in herds; right or wrong?
"The more you eat, the less flavour; the less you eat, the more flavour." Which is the origin of this proverb?
What is the present name of the Lushai hill region?
Lagomorphs are not rodents. Mention one example.
Mention the name of a fruit belonging to the rose family.
If you feel you are stumped, don't worry, you'll get all the answers in Junior Chandamama October 2006 issue. Go, grab a copy!
Junior
CHANDAMAMA
THE ONE-STOP COMPLETE FUN AND ACTIVITY MAGAZINE
NOW AVAILABLE AT YOUR NEAREST NEWS STAND FOR
RS.15 PER COPY
PAY ONLY RS.150 FOR ANNUAL SUBSCRIPTION AND SAVE RS.30
For Further Details write to :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
82, Defence Officer's Colony,
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097.
TREASURE-TROVE FOR TALENTED TOTS
Junior
CHANDAMAMA
STORY OF DIWALI
STORIES AND ACTIVITIES SPECIALLY CREATED FOR CHILDREN BELOW 9 YEARS

सम्पुट-५७ अक्तूबर २००६ सञ्चिका - १०

अंतरंग

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd. to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १५० रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागि रेड्डी और चक्रपाणि

फिज़ूलखर्ची गरीबी की माँ है

उपर्युक्त सारगर्भित कहावत आजकल अधिक प्रासंगिक है क्योंकि अन्य अनेक पदार्थों के साथ-साथ आहार अनेक कारणों से नष्ट किया जाता है। जब विश्व आहार दिवस १६ अक्तूबर को मनाया जा रहा है, हमें इस विसंगति पर आश्चर्य होता है: जबकि आहार का सही अर्थ में अभाव नहीं है, विश्व के अनेक भागों में आहार के अभाव में लोग मृत्यु के आहार बनते देखे जाते हैं। चिन्ता का एक कारण आहार की बर्बादी है। जब आहार बर्बाद किया जाता है तो इसका अर्थ होता है जरूरतमन्दों को आहार से वंचित कर देना। यह कहना गलत नहीं होगा कि नष्ट किये गये आहार का पचास प्रतिशत भाग बच्चों की थालियों से आता है। यह दोष सच पूछें तो उनके माता-पिता का ही है।

बच्चों की पसन्द के अनुसार आहार का चयन या भोजन तैयार करना उनके लिए कठिन नहीं होना चाहिये, साथ ही, छोटे और बर्धनशील बच्चों को तो केवल पौष्टिक आहार ही दिया जाना चाहिये।

मदर टेरेसा के जीवन का एक प्रसिद्ध उपाख्यान है कि जब वह अपने सम्मान में दिये गये एक दावत के बाद मेज़ों पर बिखरे बर्बाद जूठन आहार को इकट्ठा करने लगीं तब यह देखकर मेजबानों के सिर शर्म से झुक गये। उन्होंने भावुक होकर कहा, "मेरी देखभाल में ऐसे लोग हैं जिन्होंने अपने जीवन में ऐसा भोजन कभी नहीं देखा है। मैं नहीं चाहती कि यह नष्ट हो जाये।" जब आप यह कहानी अपने बच्चों को सुनायें तो उन्हें ध्यान से देखें। यदि वे शपथ लें कि वे भोजन नष्ट नहीं करेंगे तो यह उस महान महिला के प्रति उनकी श्रद्धांजलि होगी। यह इस बात का भी सूचक होगा कि छोटे बच्चों के दिल में गरीबों के लिए प्यार है।

सम्पादक : विश्वम

Visit us at : http://www.chandamama.org

पाठकों का पन्ना

तन्वी डी.गोर कच्छ से

पिछले अनेक वर्षों से *चन्दामामा* परिवार में आ रहा है। इसकी कहानियों को पढ़कर हमलोग अपनी चिन्तन शक्ति विकसित करने में समर्थ होते हैं। हमलोग अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को भी विकसित करते हैं। हमलोगों को इसके रंगीन चित्र बहुत पसन्द हैं। *चन्दामामा* हमलोगों की प्रिय पत्रिका है।

करणचंद मेरठ से

साठ वर्षों का *चन्दामामा* जीवन के रंगों से शोभायमान है। सरल भाषा में यह पत्रिका भारतीय संस्कृति के वैभव को बतलाती है, दिखलाती है, पौराणिक ऐतिहासिक लोक में हमें ले जाती है और आश्चर्य में डुबो देती है। इसे बच्चों से लेकर बड़ों तक पढ़ते हैं और आनंद-सागर में डुबकियाँ लगाते हैं। भविष्य में यह और प्रकाश फैलाये, सबमें ज्ञान-विज्ञान विकीर्ण करे। इसमें छपनेवाली, लोककथाएँ, छायाचित्र शीर्षक प्रतियोगिता और बच्चों के लिए उपयोगी कितने ही शीर्षक मनमोहक होते हैं। उन्हें पढ़े और देखे बिना रहा नहीं जा सकता।

महीने के प्रारंभ में हम चाहे कोई और पत्रिका क्यों न खरीदें, पर पहले पढ़ते हैं, *चन्दामामा* । उसका आनंद लेने पर ही मन निश्चिंत होता है। जुलाई का मुखचित्र आकर्षक है। बच्चों के लिए एक विशेष अंक प्रकाशित हो, यह हमारी प्रबल इच्छा है।

राहुल हुबली से

निस्सन्देह *चन्दामामा* सबसे पुराने और सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं में से एक है जिसे व्यापक स्तर पर सभी पढ़ते हैं, खासकर बच्चे। पत्रिका बच्चों को अपनी सुव्यवस्थित विविध कहानियों के माध्यम से अधिक पढ़ने और सीखने की प्रेरणा देती है। हम कामना करते हैं कि *चन्दामामा* सदा ताजा और नया बना रहे और राष्ट्रीय चरित्र तथा विश्वबन्धुत्व का निर्माण करे।

रामहरि यू.घोल्वे लोनावला से

हमारे बच्चों, रजनी और रोहित को आपकी पत्रिका के अगस्त अंक में प्रकाशित हमारे प्रधान मंत्री के सन्देश को पढ़ने के बाद यह मन कर रहा है कि वे डॉ. मनमोहन सिंह से मिलकर उन्हें आश्वासन दें कि वे आन्तरिक या बाह्य खतरे का सामना करने में हमेशा उनके साथ रहेंगे। *चन्दामामा* बच्चों में राष्ट्रीय तथा सार्वजनिक रुचियों को विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
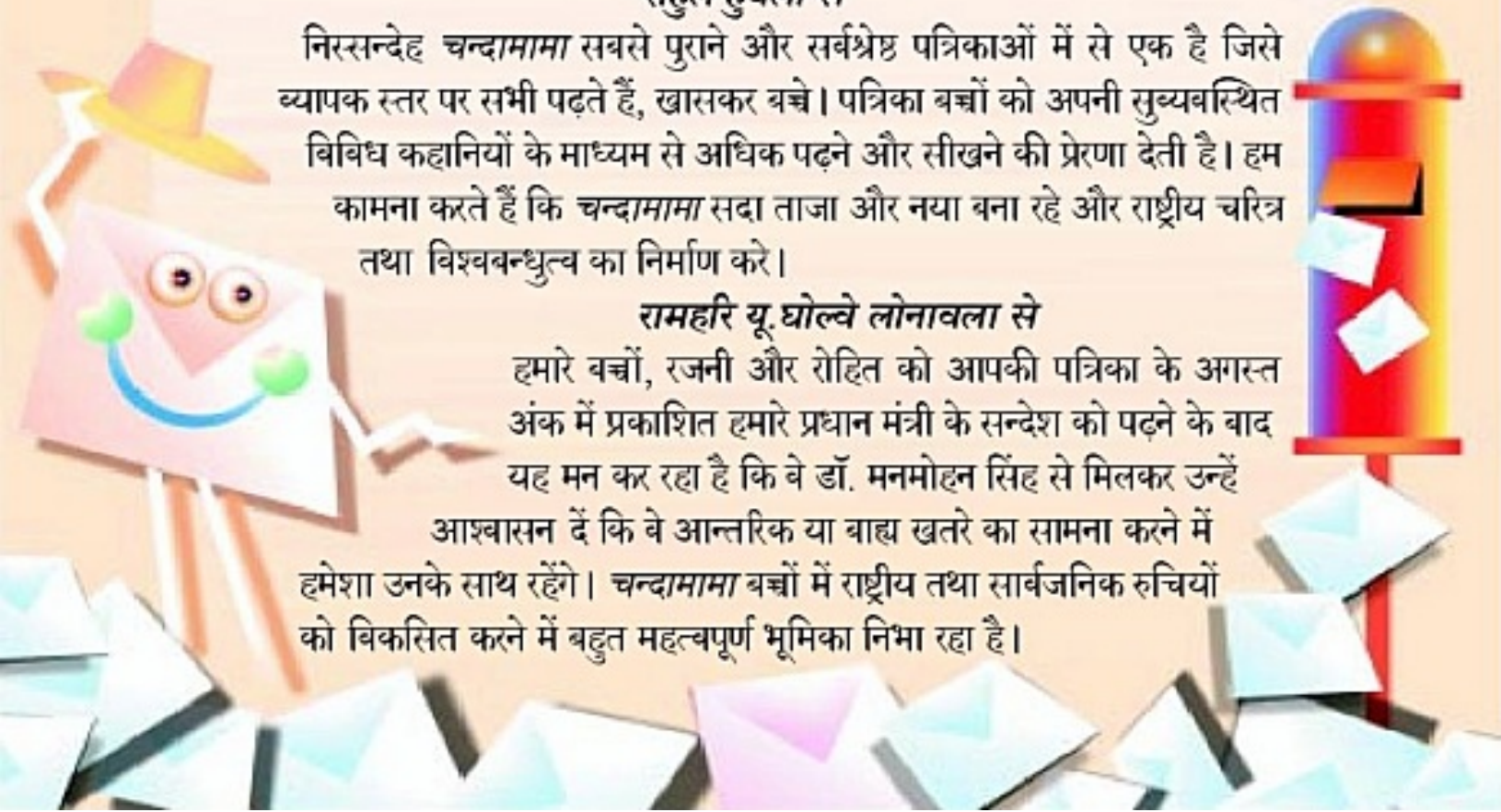
भूतों ने शादी करवायी

सौतेली माँ की देखभाल में कृष्णवेणी ने नाना प्रकार की यातनाएँ सहीं। जब वह बीस साल की थी, तब उसका पिता किसी विष ज्वर के कारण मर गया। उसकी सौतेली माँ सुमित्रा उसका विवाह कराने को क़तई तैयार नहीं थी। विवाह के बाद अगर वह ससुराल चली गई तो घर का काम-काज कौन संभालेगा? अगर उसकी शादी न करे और अपनी बेटी की शादी कर दे तो गाँव के लोग थोड़े ही चुप रहेंगे। उसपर ताने कसेंगे और कोसेंगे।

इसीलिए गाँव के लोग अगर इसके बारे में पूछते तो वह उनसे कहा करती थी, ''ज्योतिषियों का कहना है कि कृष्णवेणी की शादी के एक ही साल के अंदर उसका पति उसे छोड़कर भाग जायेगा। ऐसी स्थिति में उससे शादी करने कौन आयेगा?''

फिर भी, सत्तर साल का एक बूढ़ा कृष्णवेणी से शादी करने आगे आया। उसने खांसते हुए कहा, ''मुझे जन्म-कुंडली पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं है। लड़की मुझे अच्छी लगी और मैं उससे शादी करने को तैयार हूँ।''

उस बूढ़े के साथ एक दूसरा आदमी भी आया था। उसने सुमित्रा को बगल में ले जाकर कहा, ''यह शादी कराओगी तो साहब दो लाख रुपये देंगे। शादी का खर्च अलग।''

''फिर देरी क्यों? दस ही दिनों के अंदर शादी कर दूँगी। सारी तैयारी हो जाए तो आपको ख़बर भेजूँगी।'' सुमित्रा ने खुश होते हुए कहा।

''जन्म भर कुँवारी ही रहूँगी। मुझे अपने ही पास रहने देना। मैं यह शादी करना नहीं चाहती,'' हाथ जोड़ते हुए कृष्णवेणी ने विनती की।

''क्या बकती हो! तुम्हारी शादी नहीं होगी तो मेरी बेटी की शादी कैसे हो सकती है, तुम्हें यह शादी करनी ही होगी। ज़्यादा कुछ और

कामेश मिश्रा

बोलोगी तो तुम्हें ज़िन्दा नहीं छोड़ूँगी'' सुमित्रा ने कठोर स्वर में अपना निर्णय सुनाया।

कृष्णवेणी को लगा कि इस बूढ़े से शादी करने से अच्छा यही होगा कि मर जाऊँ। रात को जब सब सो रहे थे, तब चुपचाप बाहर चली आयी और जंगल की तरफ़ चली गयी।

श्रावण मास था। भारी बर्षा के कारण मार्ग कीचड़ से भरा हुआ था। वह कांटों की झाड़ियों से होती हुई आगे बढ़ती गई। बहुत दूर तक पैदल चलते रहने के कारण वह थक गयी और एक उजड़े कुएँ के किनारे बैठ गयी।

उसे वहाँ देखकर एक भूत और एक भूतनी कहने लगे, ''वाह, कितनी सुंदर लड़की है। इतनी रात में अकेले ही यहाँ आने का दुस्साहस किया। चलो, जानें कि यह है कौन और यहाँ क्यों आयी?'' कहते हुए दोनों पेड़ पर से कूद पड़े और उसके सामने खड़े हो गये।

कृष्णवेणी बिना भय के उन्हें देखती रही और मुस्कुराने लगी। इसपर आश्चर्य प्रकट करते हुए भूत व भूतनी ने उससे पूछा, ''हमारे इस भयंकर रूप को देखकर तुम्हें डर नहीं लगता?''

''मरने के लिए तैयार घर छोड़कर आनेवाले को भला भय क्या होगा?'' कहती हुई कृष्णवेणी एक और बार मुस्कुरा पड़ी।

भूतों ने एक दूसरे को देखा और कहा, ''मरने आयी हो? कौन-सा ऐसा कष्ट आ गया, जिसके कारण तुम प्राण छोड़ने के लिए तैयार हो?''

कृष्णवेणी ने अपनी सौतेली माँ के बारे में बताते हुए कहा, ''वह हर पल मुझे सताती रहती है। उस बीमार बूढ़े से मैं शादी करना नहीं चाहती, भले ही मर क्यों न जाऊँ।''

भूतनी ने उसपर दया दिखाते हुए कहा, ''बेचारी की बड़ी बुरी हालत है।''

भूत ने भूतनी का समर्थन किया, ''तुमने ठीक कहा। हमें इसकी मदद करनी चाहिये।''

फिर दोनों भूतों ने आपस में बातें कर लीं और कृष्णवेणी से कहा, ''चिंता मर कर। तुम्हारी शादी एक योग्य और सुंदर युवक से करायेंगे। यह जिम्मेदारी हम पर छोड़ दो। पर, तुम्हें एक काम करना होगा। हम चाहे, किसी से बात करें, तुम्हें चुप रहना होगा। मंजूर है?''

कृष्णवेणी ने 'हाँ' के भाव में सिर हिलाया। भूतों ने तुरंत मानव रूप धारण कर लिया, उ न

दोनों ने उसी समय एक बैलगाड़ी की सृष्टि की और उसमें चार गठरियाँ रख दीं। ''देखो, कृष्णवेणी, इस गाड़ी में बैठ जाओ। हम तुम्हारे माँ-बाप हैं, यह भूलना मत।''

गाड़ी निकल पड़ी। बाढ़ के कारण पानी तेज़ी से बह रहा था। गाड़ी एक जगह रुक गयी। एक दूसरी गाड़ी भी वहीं रुकी हुई थी। एक युवक उसके पास ही खड़ा था। इतने में गाड़ी से तीन लोग उतरे। युवक से हो रही उनकी बातचीत से पता चला कि वे उसके माँ-बाप और बहन हैं।

भूत उनसे बात करने ही जा रहे थे कि इतने में युवक के पिता ने उनसे पूछा, ''आप लोग कहाँ जा रहे हैं। हम दुर्गापुर के निवासी हैं। हमें कल ही मालूम हुआ कि कनकपुर में हमारे बेटे सूरज के योग्य एक अच्छा रिश्ता है। लाखों रुपये दहेज में देने कितने ही लोग आगे आये। परंतु हमारे सूरज को कोई लड़की पसंद नहीं आयी।''

इसपर भूतों को आश्चर्य हुआ। भूतनी ने कहा, ''हमारी बेटी कृष्णवेणी भी ऐसी ही समस्या का सामना कर रही है। उसकी सुंदरता पर मुग्ध होकर कितने ही युवक उससे विवाह रचाने आगे आये। उन्होंने साफ-साफ बताया भी कि उन्हें दहेज चाहिये ही नहीं। पर हमारी बेटी को उनमें से कोई भी पसंद नहीं आया। हाल ही में हमें जानकारी मिली कि प्रतापगढ़ में एक सुंदर युवक है। उसी विषय में हम वहाँ जा रहे हैं। इस बाढ़ के कारण बीच रास्ते में ही अटक गये।''

''क्या इस दुनिया में अब भी ऐसे लोग हैं, जो
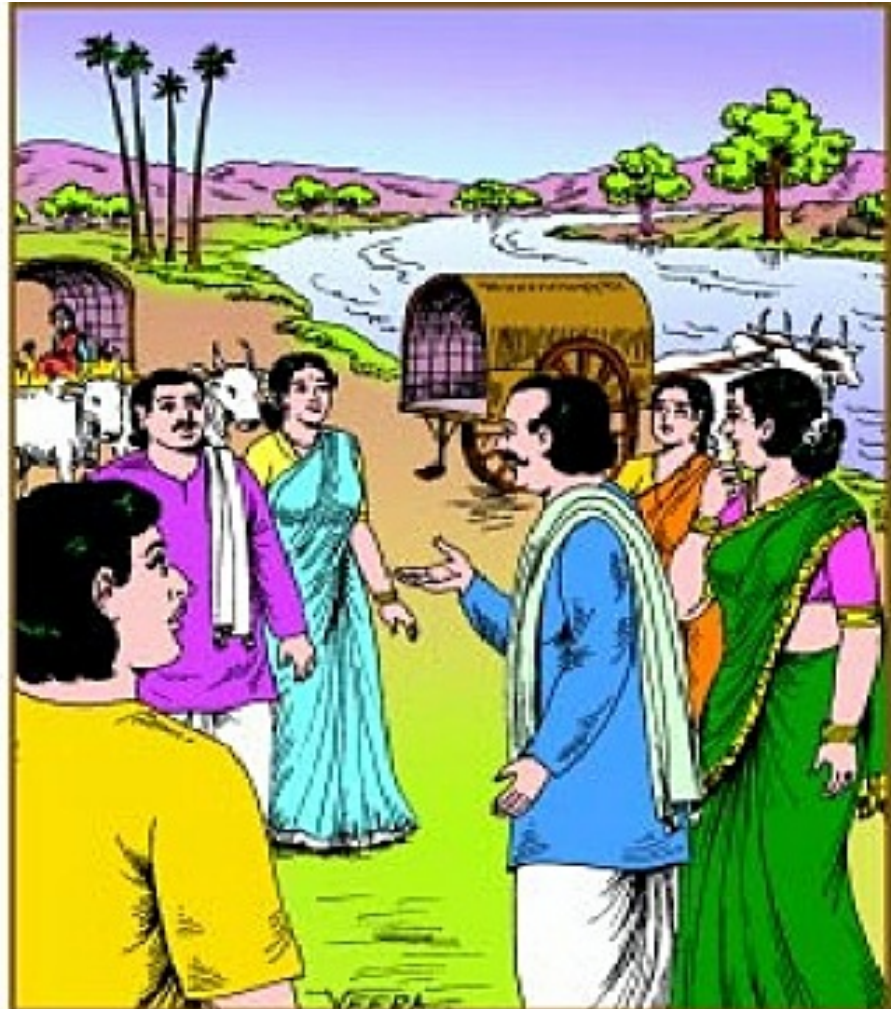
दहेज बिना शादी करने को तैयार हैं?'' सूरज की माँ ने दांतों तले उंगली दबाते हुए कहा।

सूरज उनकी बातें ध्यान से सुन रहा था। वह माँ-बाप के पास जाकर दबे स्वर में उनसे कुछ बोला। उसके पिता ने, तुरंत भूतों से कहा, ''हम आपकी बेटी को देखने के इच्छुक हैं।''

भूतों के बुलाने पर कृष्णवेणी गाड़ी से उतरी। सूरज उसकी सुंदरता देखता ही रह गया। चांदनी में, सूरज की सुंदरता, शारीरिक बल और स्वस्थ शरीर को देखकर कृष्णवेणी ने लज्जा के मारे सिर झुका लिया।

भूतों ने यह देखते हुए उत्साह के साथ कहा, ''इतनी लंबी अवधि के बाद एक ऐसा वर मिल ही गया, जिसे हमारी कृष्णवेणी ने पसंद किया।''

''कन्या के अच्छे लगने मात्र से क्या शादी
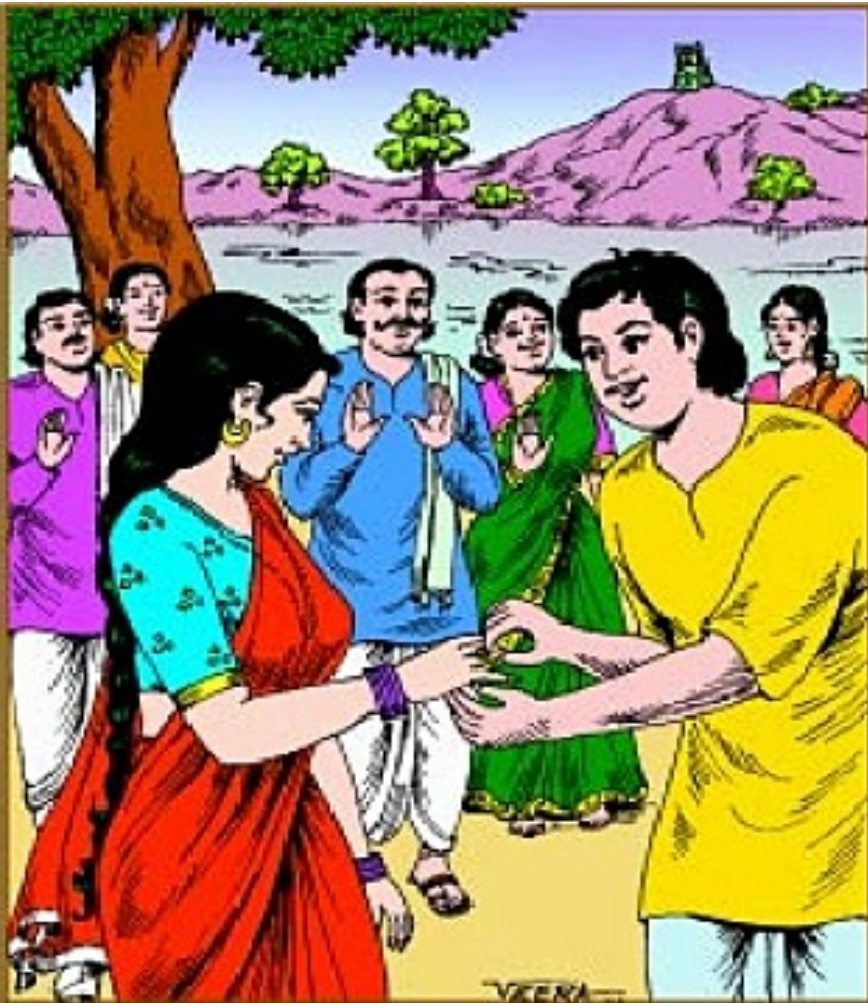
हो जायेगी? हम भी चाहते हैं कि हमारे बेटे की शादी एक सुंदर कन्या से हो। पर हमें मुँह माँगा दहेज चाहिये,'' सूरज की माँ ने कहा।

सूरज, कृष्णवेणी के निकट आया और माता-पिता से बोला, ''यह लड़की मुझे बहुत अच्छी लगी है।''

सूरज की माँ ने फ़ौरन कहा, ''यह तो ठीक है, तुम्हें बहुत अच्छी लगी। पर, यह भी जानें, दहेज में मिलेगा क्या?''

''कल भाद्रपद मास है। दो और महीनों तक विवाह का मुहूर्त नहीं है। हमारे गाँव के पुरोहित ने भी यही कहा था,'' सूरज ने माँ-बाप की ओर मुड़कर कहा।

''फिर देरी किस बात की? मुख्य हम सब लोग यहाँ मौजूद हैं। अभी, यहीं यह विवाह हो जाए तो सब कुछ ठीक हो जायेगा,'' भूतों ने जल्दबाजी दिखाते हुए कहा।

सूरज की माँ ने स्पष्ट रूप से कड़वे स्वर में कहा, ''दहेज आँखों के सामने दिखे, तभी यह शादी होगी।''

भूत तुरंत गाड़ी में से चार गठरियाँ ले आये और उनमें भरी अशर्फ़ियों को दिखाते हुए सूरज की माँ से कहा, ''इसमें आपको जितना दहेज चाहिये, उतना तो है ही, साथ ही गाँववालों के भोज के लिए जितना खर्च होगा, उससे अधिक धन-राशि भी है।''

सूरज की माँ ने तुरंत वे गठरियाँ अपनी गाडी में रखवा दीं।

सूरज और कृष्णवेणी ने वहीं एक दूसरे की उँगली में अंगूठी भी पहना दी। यह सब होते-होते सबेरा होने जा रहा था।

नदी के पार के पर्वत पर स्थित मंदिर को दिखाते हुए कृष्णवेणी ने सूरज से कहा, ''पहले वहाँ जाकर भगवान के दर्शन करेंगे। फिर, आपके गाँव जायेंगे।''

''तुम पति-पत्नी जाओ और भगवान के दर्शन करके आओ। गाँव में भोज का प्रबंध भी तो करना है। हम गाँव पहुँचकर इस काम में लग जायेंगे।'' सूरज के पिता ने कहा।

''ठीक है, किसी और किराये की बैलगाड़ी में हम लौट आयेंगे।'' सूरज ने कहा।

पानी भरा हुआ था। सूरज, कृष्णवेणी का हाथ पकड़कर उसे धीरे-धीरे ले जाने लगा।

कृष्णवेणी को यह भय होने लगा कि अगर सूरज को मालूम हो जाए कि भूतों ने यह शादी करवायी तो क्या परिणाम होगा।

उसे लगा कि यह बात सूरज से छिपानीनहीं चाहिये। उसने धीमे स्वर में उससे कहा, ''क्षमा कीजिये। मेरी शादी मेरे माता-पिता ने नहीं, भूतों ने करवायी है।'' साथ ही कृष्णवेणी ने अपने बारे में सब कुछ बता दिया।

इतने में पीछे से बड़ा कोलाहल सुनायी पड़ा।

''धोखा, बड़ा धोखा, उन गठरियों में सोने की अशर्फियाँ नहीं, राख ही राख और हड्डियाँ ही हड्डियाँ हैं।'' कहकर चिल्लाती हुई सूरज की माँ राख को नीचे गिरा रही थी।

यह सुनते ही भूत और भूतनी ने सूरज की माँ से कहा, ''माँ जी, हमारी बहू दहेज नहीं लाई थी, इसलिए हमने उसे बहुत सताया। इसी वजह से हम मर कर भूत बन गये। आप भी ऐसा पाप मत कीजिये। नहीं तो हो सकता है, आप भी हमारी ही तरह भूत बन जाएँ। आप ही को निर्णय लेना होगा कि आपको भूत बनना है या अपनी बहू के साथ प्रशांत जीवन बिताना है। साथ ही यह भी याद रखियेगा, अगर आपने बहू को कोई हानि पहुँचायी तो हम आपको ऐसा पाठ सिखायेंगे, जिसे आप जीवन भर याद रखेंगे।'' यों कहकर वे गायब हो गये।

सूरज के माँ-बाप, बहन एक क्षण के लिए भय के मारे थरथर कांप उठे।

''उनका रूप केवल भूतों का रूप है। पर, उनमें परोपकार बुद्धि भरी हुई है। आप लोग तो दहेज के पीछे पागल होकर पिशाच बन गये। वे भूत आपसे कहीं अच्छे हैं,'' कहता हुआ सूरज, पत्नी सहित वहाँ आया।

''सूरज, अब हम संभल गये। हमारी बुद्धि ठिकाने आ गयी। अब जन्म-भर दहेज की बात ही नहीं उठायेंगे। हमेंमाफ़ करना। महालक्ष्मी जैसी बहू मिल गयी। फिर हमें और क्या चाहिये?'' माता-पिता ने कहा।

अपने माँ-बाप में आये परिबर्तन को देखकर सूरज बहुत खुश हुआ। उसने कृष्णवेणी के हाथों को बड़े प्यार से पकड़ लिया।

शहद की बूँद से आफ़त

प्रतिष्ठान नगर का एक पथिक अपने सिर पर शहद का मटका लिए घूम रहा था। उसकी लापरवाही के कारण वह मटका ज़मीन पर गिर गया। शहद की बूँदों को चूसने के लिए फ़ौरन एक मधुमक्खी वहाँ आ टपकी। उसे निगलने के लिए एक मकड़ी वहाँ आयी। मकड़ी को खा जाने एक छिपकली वहाँ आ पहुँची। छिपकली को खाने एक बिल्ली आयी। इतने में कुत्ते के साथ एक सैनिक वहाँ आ पहुँचा। कुत्ता बिल्ली पर झपटा । वह एक व्यापारी की पालतू बिल्ली थी। वह व्यापारी आकर कुत्ते को मारने लगा। व्यापारी का सिर काटने के लिए सैनिक ने तलवार निकाली।

इतने में मकड़ी मधुमक्खी को खा गई। मकड़ी को छिपकली और बिल्ली छिपकली को निगल गई। कुत्ते ने बिल्ली के गले में काटा। व्यापारी ने लाठी से कुत्ते को मार डाला। सैनिक ने व्यापारी का सिर काट डाला। जनता ने सैनिक को घेर लिया। राजा जनता पर कार्रवाई करने को सेना भेजने लगा।

तब महामंत्री ने राजा को समझाया, ''महाराज, जो होना नहीं चाहिये था, वह हो गया। शहद की बूँदों पर मधुमक्खी का मंडराना, मकड़ी का उसे खा जाना, मकड़ी को छिपकली का खा जाना, और छिपकली को बिल्ली का खा जाना, यह सब कुछ प्रकृति सहज है। परंतु व्यापारी और सैनिक का व्यवहार अप्राकृतिक है। चूँकि वह व्यापारी ईमानदार था, इसलिए जनता बेकाबू हो गयी और सैनिक पर टूट पड़ी। आप भी अब अपने वश में नहीं हैं, जनता को दंड देने पर तुले हुए हैं, यह आपकी प्रकृति नहीं है। अति क्रोध मनुष्य को दानव बना देता है। वह आवेश में कुछ भी करने को सन्नद्ध हो जाता है, जिससे इसके परिणाम बुरे होते हैं।''

राजा को, मंत्री की बातों में भरी क्षिता समझ में आयी। इससे, जो विनाश होनाथा, रुक गया।

- ऋषभ वसुभाग की पंचतंत्र कथा के आधार पर

भयंकर घाटी

14

(जंगल में केशव आदि को ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक का अंगरक्षकों के साथ आना दिखाई दिया। उन्होंने ब्राह्मदण्डी को पेड़ की टहनी से बाँध दिया, उनके घोड़े ले लिये। उन पर सवार होकर वे भाग निकले। गाँववाले उनका पीछा करने लगे। जंगलियों के सरदार ने उनकी मदद करने का वचन दिया। वह उनको एक गुम जगह पर ले जाने लगा। बाद में...)

केशव, जयमल्ल, बूढ़ा और जंगलियों का सरदार, उस घने जंगल में एक घंटे तक चलते रहे। कहीं कोई रास्ता न था, सब जगह अन्धेरा था। कहीं कुछ दिखाई न देता था। अन्धकार को टटोलता हुआ, झाड़ियों को हटाता, रास्ता बनाता हुआ जंगली सरदार आगे-आगे चल रहा था। उसके पीछे-पीछे ये तीनों जा रहे थे।

यदि सरदार को मालूम हो गया कि वे कौन हैं, तो सम्भव है कि वह उनको सैनिकों को सौंप दे- यह सन्देह बूढ़े और केशव और जयमल्ल को सता रहा था।

क्योंकि ब्राह्मदण्डी की आपत्ति अब टल गई थी, इसलिए बूढ़े ने घोड़ों पर सवार होकर भाग निकलना ही उस समय उचित समझा।

उसने चुपचाप यह बात केशव और जयमल्ल से भी कही। पर वे इसके लिए न माने। ''यदि अन्धेरे में, यह बिना जाने कि वे किस ओर जा रहे हैं, भागते गये, तो ब्रह्मापुर के आसपास भी पहुँच

सकते हैं। तब उन पर ज़रूर आपत्ति आयेगी।'' उन्होंने कहा।

''आधे राज्य के लालच में यदि इस जंगली ने ही धोखा देने का निश्चय कर लिया तो क्या किया जाये?'' बूढ़े ने कहा।

केशव ने म्यान में रखे तलवार की ओर इशारा किया। जयमल्लु ने तरकश में से एक बाण निकाला और फिर उसको रख दि या। अपने लड़के और उसके मित्र ने जो बहादुरी और बुद्धिमत्ता का संकेत दिया था उसे देखकर बूढ़ा सन्तुष्ट हुआ। इस बुढ़ापे में अगर मैं गिर-गिराकर मर भी गया, तो मेरा लड़का, इस संसार के धक्के खा सकेगा और कठिनाइयों व खतरों के बावजूद उनसे बाहर निकल सकेगा और जीवन में सफल हो सकेगा, बूढ़े को यह पक्का विश्वास हो गया।

सबसे आगे जंगलियों का सरदार चल रहा था। वह एक महावृक्ष के नीचे रुका। उसने अपने भाले से उस पेड़ के तने पर तीन बार मारा।

फौरन पेड़ के पीछे से आवाज़ आई, ''कौन है, ठहरो?'' प्रश्न ज़ोर से सुनाई दिया।

सरदार भाला ऊपर उठाकर ''गड़ेजंग, गड़ेजंग'' दो बार ज़ोर से चिल्लाया।

तुरंत दो जंगली युवक वहाँ भागे-भागे आये। उन्होंने पूछा, ''जंग सरदार, क्या हुक्म है?'' वे सिर नीचा करके खड़े हो गये।

''ये तीन राहगीर हैं। डाकुओं से बचकर आये हैं और हमारी रक्षा चाहते हैं। इनको सवेरे तक बचाना हमारी जिम्मेदारी है। हमारे लोगों में से पाँच दस को गाँव के पास भेजो। वहाँ हमारे आदमियों में और गाँव के दुष्टों में युद्ध हो रहा है। उनसे यह मालूम करके आने के लिए कहो कि वहाँ क्या हुआ है।'' गड़ेजंग ने कहा।

सरदार का हुक्म होते ही एक पेड़ के पीछे भागा और दूसरा जयमल्लु और केशव को लेकर पासवाली गुफ़ा की ओर चलने लगा।

केशव और उसके साथी पेड़ पौधे से ढके हुए गुफ़ा में पहुँचे। जंगलियों ने जो कुछ दिये, वे खाये।

वे इधर हिरण का भुना हुआ माँस खा रहे थे और उधर ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक भूख और अपमान से जला जा रहा था और गाँववालों को गालियाँ दे रहा था। उसकी बुरी हालत थी।

''विद्रोहियों को आश्रय तो दिया ही और

राजदूतों को मारने के लिए, उनको जंगल के रास्ते में तैनात करते हो। इस महा अपराध के लिए, मैं इस गाँव के बड़े, छोटे, बूढ़े, बच्चे, स्त्री, मर्द- सबको क्षण में भस्म कर सकता हूँ। ''अ हूँ हूँ, फट.. कालभैरव।'' ब्राह्मदण्डी का मन्त्रपाठ सुनकर चिल्लाते-चिल्लाते कुछ लोग जंगल से भागे-भागे गाँव में आने लगे। उनके हाथ की मशालों क ी रोशनी में देखा जा सकता था कि कुछ लँगड़ा रहे हैं और कुछ घायल हैं और उनके साथी उनको ढोकर धीमे-धीमे ला रहे हैं।

''विद्रोही कहाँ हैं?'' ब्राह्मदण्डी चिल्लाया। उसके अंगरक्षक जितवर्मा और शक्तिवर्मा आदि कुछ लोग, गाँववालों की ओर भागे। पर जो उस तरफ़ भागे आ रहे थे, वे गाँव के ही युवक थे। उनके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। उनमें कोई ऐसा न था, जिसे घाव न लगे हों।

''क्या विद्रोही भाग गये हैं?'' जितवर्मा और शक्तिवर्मा ने पूछा।

''वे यूँही न भागे, हम पर जंगलियों को भी छोड़ते गये। हमें अब आप का आधा राज्य नहीं चाहिये। हम में से कुछ लोग मारे भी गये। आपके आधे राज्य को नमस्ते।'' गाँव के युवकों ने कहा।

इतने में ब्राह्मदण्डी वहाँ आया। वह समझ गया कि भेस बदलकर, केशव, जयमल्ल और बूढ़ा हाथ से निकलकर भाग गये हैं। उसके गुस्से की हद न थी।

वह गरजा, ''मैं नहीं जानता था कि इस गाँववाले इतने डरपोक हैं। इतने सारे तुम हो और
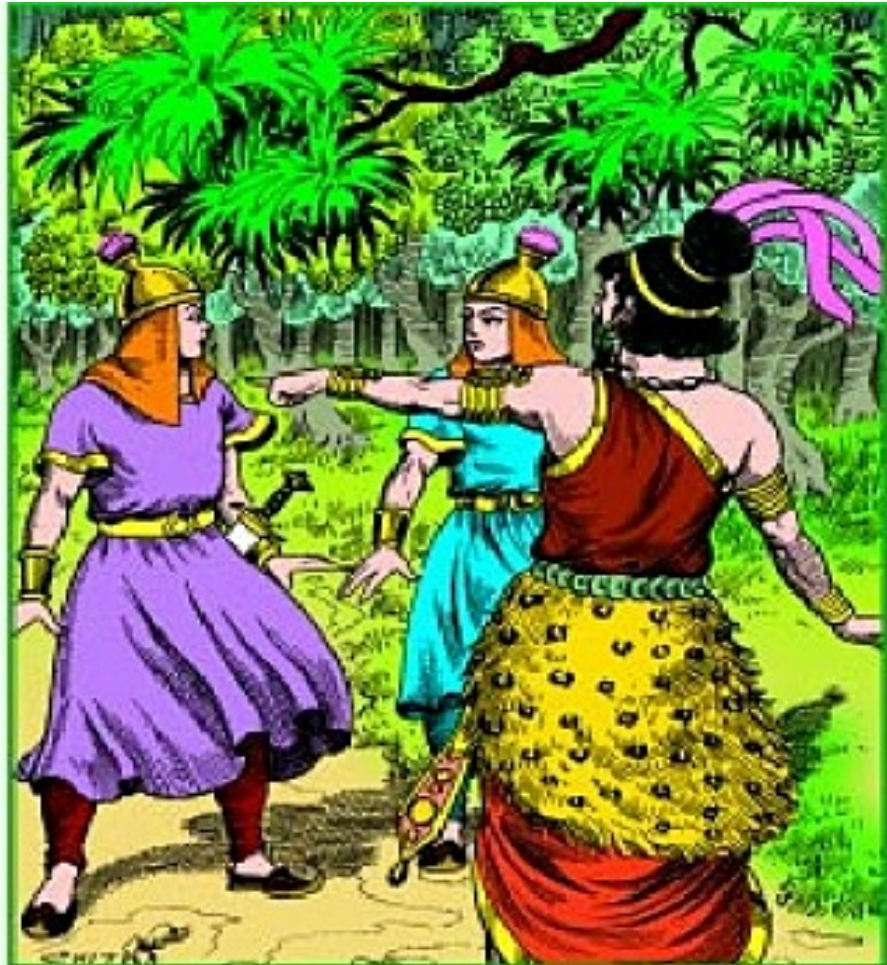
तुम तीन विद्रोहियों को भी न पकड़ सके। जितवर्मा और शक्तिवर्मा, तुम तुरंत जाकर महाराजा और राजगुरु से यहाँ जो कुछ हुआ है, उसके बारे में बताओ। यदि इन विद्रोहियों को न पकड़ा गया, तो विंध्याचल पहुँचते-पहुँचते हम मार दिये जायेंगे।''

जितवर्मा और शक्तिवर्मा एक दूसरे का मुँह देखने लगे। दोनों डरने लगे। 'अगर ब्रह्मापुर के रास्ते में इन द्रोहियों ने हमें पकड़ लिया, तो हम कहाँ के रहेंगे?' वे सोचने लगे।

उनके मन की बात ताड़कर, ब्राह्मदण्डी ने हुंकार करके कहा, ''तुम मेरे अंगरक्षक हो, अगर तुम पर भरोसा करके, विंध्याचल की ओर गया, तो मौत को मोल लेना है।''

''यह नहीं, ब्राह्मदण्डी? क्या यह इतना ज़रूरी

है कि यह बात रातों रात, राजगुरु के पास पहुँचाई जाये?'' जितवर्मा ने पूछा।

''ज़रूरी? क्यों नहीं है? अगर उन विद्रोहियों को यूँही घूमने दिया गया, तो हम विंध्याचल कैसे पहुँच सकेंगे? वे तुम सैनिकों से भी अधिक चुस्त, बहादुर और चालाक हैं। वे निश्चित रूप से हमारी योजना को जान गये हैं और हमें मार कर भयंकर घाटी का खजाना लूटना चाहते हैं। देखते-देखते उन्होंने हमारे घोड़े भी तो चुरा लिए हैं। राजगुरु को यह सब बता दिया गया, तो वे अपने सैनिक भेजकर, उनको ढूंढ़वा देंगे न? यह जितना जल्दी हो सके, उतना अच्छा है?'' ब्राह्मदण्डी ने कहा।

जितवर्मा और शक्तिवर्मा ने गाँव के पाँच दस आदमियों को धन का लालच दिया।उनको साथ लेकर ब्रह्मापुर की ओर निकल पड़े। वे अभी कुछ ही दूर गये थे कि मान्त्रिक भागा-भागा आया। जितवर्मा का कन्धा पकड़कर कुछ दूर ले गया। ''जित, यदि तुम शक्ति के साथ चले गये, तो मैं यहाँ अकेला रह जाऊँगा। इन दुष्टों में से किसी ने मेरा गला काट दिया, तो मेरी क्या हालत होगी? तुम यहीं रहो। शक्ति नगर चला जायेगा।''

जितवर्मा और शक्तिवर्मा ने भी आपस में तय कर लिया। जितवर्मा, ब्राह्मदण्डी के साथ गाँव में रहने के लिए मान गया। दस गाँववालों को साथ लेकर, सवेरा होते होते शक्तिवर्मा ने ब्रह्मापुर पहुँचकर राजगुरु के दर्शन किये।

जो कुछ गुज़रा था, उसे बढ़ा-चढ़ाकर शक्तिवर्मा ने राजगुरु को सुनाया। राजगुरु ने सब सावधानी से सुनकर कहा, ''तो ये तीनों मेरे

प्रयत्न को बिफल करने की कोशिश में हैं, मेरे मार्ग में विघ्न पैदा कर रहे हैं। इतना ही नहीं, लगता है ये लोग भी भयंकर घाटी का खजाना लूटना चाहते हैं। मांत्रिक का सन्देह ठीक हो सकता है। उसका शिष्य भी थोड़ा-बहुत मंत्र-तंत्र जानता होगा। इतना ही नहीं, ब्राह्मदण्डी का सारा रहस्य भी मालूम होगा। उसे हर हालत में पकड़ना होगा।'' मन ही मन कुछ देर सोचकर उसने सेनापति के पास खबर भिजवाई।

थोड़ी देर बाद सेनापति के आते ही राजगुरु ने बताया कि ब्राह्मदण्डी की जान जंगल में जाती जाती बची। ''यह बात अब साफ़ हो गई है कि वे तीनों द्रोही अपने राज्य की सीमा में ही हैं। तुम सब तरफ़ सैनिकों को भेजकर उनको पकड़ो। सीमा पर जो सैनिक हैं, उनको भी सावधान कर दो। इन द्रोहियों ने अब क्षत्रियों का वेष पहन रखा है। बूढ़े ने साधु का बेष धारण कर रखा है, मालाएँ वगैरह पहन रखी हैं।''

सेनापति के राजगुरु से विदा लिये अभी दो-तीन घंटे भी न हुए थे कि उसने सैनिकों को कई टुकड़ियों में जंगल छानने के लिए भेज दिया। एक-एक टुकड़ी में बीस-बीस सिपाही थे। फिर वह स्वयं, पच्चीस सैनिकों को लेकर विद्रोहियों को पकड़ने निकला।

ठीक दुपहर थी। सूर्य अंगारे बरसा रहा था। जंगल में पेड़ों के नीचे छाया थी।

उस गुफ़ा में से निकलकर जहाँ उन्होंने रात काटी थी, केशव, जयमल्ल और बूढ़ा गुफ़ा के सामने के पेड़ों के नीचे बैठ गये। उनके सामने एक पीठिका पर, जिस पर शेर के चमड़े बिछे हुए थे, गड़ेजंग बैठा हुआ था। केशव और उसके साथी अपनी यात्रा के बारे में गड़ेजंग से बातें कर रहे थे।
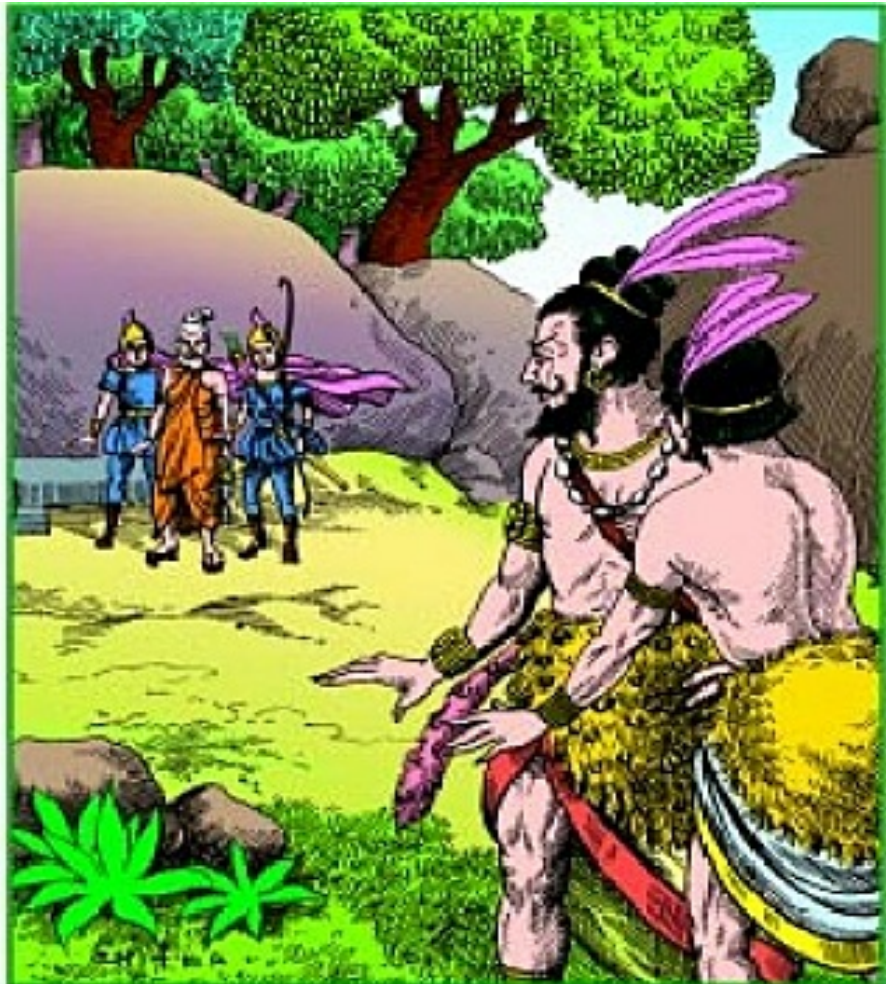
यकायक दो जंगली युवक पेड़ों के पीछे से हाँफते-हाँफते बाणों की तरह आये। गड़ेजंग ने उनकी ओर आश्चर्य से देखा। ''क्या हुआ?'' उसने पूछा।

उन युवकों ने थोड़ी देर तक सन्देह की दृष्टि से केशव और जयमल्ल की ओर देखा। ''जंग सरदार, आप थोड़ा इस ओर आओ। बतायेंगे।''

गड़ेजंग पीठिका पर से उठकर उनके साथ कुछ दूरी तक चलकर रुका। एक युवक धीमे धीमे अपने सरदार से कुछ कहने लगा। गड़ेजंग ने कुछ सुना, फिर सिर एक तरफ़ फेरकर, केशव

और उसके साथियों को चकित होकर देखा, फिर सिर हिलाता-हिलाता उनकी ओर आने लगा।

केशव ताड़ गया कि उन पर कोई आपत्ति आनेवाली है। जयमल्ल और बूढ़े का हाथ बरबस म्यानों पर चला गया। यह सब गड़ेजंग देख रहा था।

उसने मुस्कराते हुए कहा, ''तुम्हारी बहादुरी तारीफ़ के काबिल है। तुम्हारा भेद मालूम हो गया है। ब्रह्मापुर के सैनिक तुम्हारे लिए सारा जंगल छान रहे हैं। सीमा के सैनिकों को भी सावधान कर दिया गया है। तुम न क्षत्रिय हो, न साधारण यात्री ही। राजा से तुम्हारी शत्रुता है।''

''आधे राज्य के लालच में गड़ेजंग, क्या तुम शरणागतों को शत्रुओं को सौंपने जा रहे हो?'' केशव ने पूछा।

गड़ेजंग ठहाका मारकर हँसा। पीठिका पर से नीचे सीधा गिरा। फिर उठकर कहने लगा, ''आधा राज्य नहीं, यदि सारा ब्रह्मापुर राज्य भी दे, तो भी मैं न लूँगा। मुझे क्या ज़रूरत है राज्य की? यह महारण्य मेरा राज्य है। मेरे कुलवाले, यहाँ घूमने फिरनेवाले साधु और जन्तु मेरी प्रजा हैं। तुम तुरंत जंगली वेष पहन लो। मेरे साथी तुम्हें सीमा से बाहर ले जायेंगे।''

यह सुनकर केशव और जयमल्ल के आनन्द की सीमा न थी। उन्होंने गड़ेजंग के सामने दो-तीन बार अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। गड़ेजंग ने जो हरिणों की छाल दी, उन्होंने पहन ली। सिर पर पंख लगा लिये। अपने कपड़ों का गट्ठर बाँधकर, कन्धे पर डाल वे चल पड़े।

गड़ेजंग ने दोनों जंगली युवकों को बुलाकर कहा, ''पहले घोड़ों को जंगल में भगा दो। फिर मेरे मित्रों को जंगल के रास्ते राज्य की सीमा से बाहर ले जाओ। यदि सैनिकों से लड़ना पड़ जाये, तो पहले तुम्हारे प्राण जायें, समझे।''

देखते-देखते घोड़े जंगल में भगा दिये गये। एक जंगली युवक, उनके आगे और दूसरा उनके पीछे चल रहे थे। और उनके बीच में जंगलियों का वेष पहनकर, केशव, उसका पिता और जयमल्ल ब्रह्मापुर की सीमाओं से बाहर जाने के लिए निकल पड़े। ***(अभी है)***
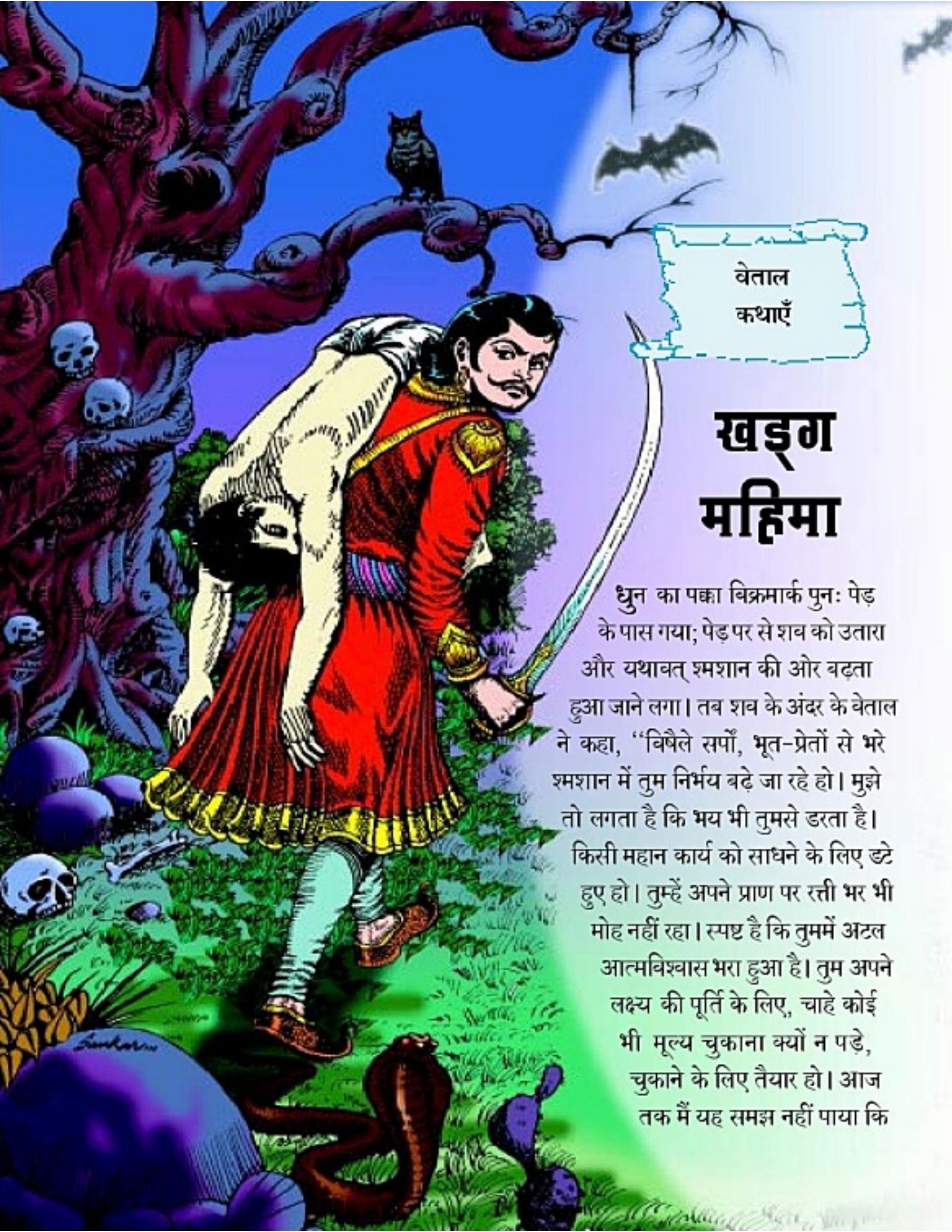
खड्ग महिमा

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया; पेड़ पर से शव को उतारा और यथावत् श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''विषैले सर्पों, भूत-प्रेतों से भरे श्मशान में तुम निर्भय बढ़े जा रहे हो। मुझे तो लगता है कि भय भी तुमसे डरता है। किसी महान कार्य को साधने के लिए डटे हुए हो। तुम्हें अपने प्राण पर रत्ती भर भी मोह नहीं रहा। स्पष्ट है कि तुममें अटल आत्मविश्वास भरा हुआ है। तुम अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए, चाहे कोई भी मूल्य चुकाना क्यों न पड़े, चुकाने के लिए तैयार हो। आज तक मैं यह समझ नहीं पाया कि

आखिर वह लक्ष्य तुम्हारा है क्या? मुझे तुम्हारे श्रम को देखते हुए शशिकांत नामक एक ग्रामीण युवक की याद आती है, जिसने अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अनेक कष्ट सहे, कठोर परिश्रम किया। उसकी कहानी थकावट दूर करते हुए मुझसे सुनो।'' फिर वेताल यों कहने लगाः

बहुत पहले की बात है। कनकवर नामक गाँव में शशिकांत नामक एक युवक रहा करता था। वह कितनी ही विद्याओं में प्रवीण था। विशेषकर खड्ग विद्या में उसकी बराबरी का कोई था ही नहीं। उसका पिता प्रसिद्ध व्यापारी था। दुर्भाग्यवश वह और उसकी पत्नी जहाज की एक दुर्घटना में मर गये। पिता ने जो धन छोड़ा, उससे उसने अन्य व्यापारियों के साथ व्यापार किया। परंतु अनुभवहीन उस युवक को व्यापारियों ने धोखा दिया। अब उसके पास कुछ नहीं रहा।

इस दुस्थिति में जयानंद नामक पड़ोस के गाँव का एक मित्र उससे मिलने आया। दुखी शशिकांत को सांत्वना देते हुए उसने कहा, ''शशिकांत, खड्ग विद्या में तुम्हारी दक्षता अद्भुत है। तुम्हारी शक्ति अपार है। अगर इसी गाँव तक अपने को सीमित रखोगे तो यह विद्या तुम्हारे काम नहीं आयेगी। हमारी राजधानी करिबीरपुर जाना। वहाँ अभी विजयदशमी के अवसर पर स्पर्धाएँ होने जा रही हैं। उनमें भाग लेना और अपनी दक्षता का प्रदर्शन करना। तुम्हें अवश्य ही राजा के आस्थान में काम मिलेगा। तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल होगा।''

मित्र जयानंद की सलाह शशिकांत को सही और उचित लगी। दूसरे ही दिन वह राजधानी पहुँचने निकल पड़ा। मार्गमध्य में जब वह एक घने जंगल से गुज़र रहा था, तब थकावट दूर करने के लिए एक पेड़ के तले बैठते समय किसी की चिल्लाहट सुनायी पड़ी। कोई ''बाघ, बाघ, बचाओ, बचाओ'' कहकर चिल्ला रहा था।

शशिकांत फौरन म्यान से तलवार निकाल कर उस तरफ गया, जहाँ से आवाज़ आयी। बाघ, एक मुनि पर टूट पड़ने ही वाला था, तभी शशिकांत ने मुनि और बाघ के बीच में कूद कर तलवार से बाघ पर वार किया। उस वार से बाघ घायल होकर गिर गया, पर उस समय तलवार शशिकांत के हाथ से फिसल गयी।

इतने में बाघ गुर्राता हुआ उठा। शशिकांत ने

मौक़ा देखकर बाघ के पेट में ज़ोर से लात मारी। बाघ अपने को संभाल कर फिर से शशिकांत पर आक्रमण करने के लिए उठा। शशिकांत ने बाघ के पिछले पैरों को पकड़ कर उसे दूर फेंक दिया। बाघ ज़मीन पर गिरकर छटपटाने लगा।

मुनि यह सब कुछ ध्यान से देख रहा था। उसने शशिकांत से कहा, ''वीर युवक, तुम बड़े साहसी हो। तुम्हारे जैसे निस्वार्थ वीर बिरले ही होते हैं। अपनी जान पर खेलकर तुमने मेरी रक्षा की। मैं इस प्रदेश को छोड़कर हिमालय जाना चाहता हूँ।'' कहते हुए उसने पास ही की एक झाड़ी से तलवार निकाली और कहा, ''यह बहुत ही महिमावान खड्ग है। परंतु, इसका यह मतलब नहीं कि कोई दुस्साहस करने पर उतारू हो जाओ। तुममें जब धैर्य-साहस भरा हुआ हो, खड्ग चलाने में नैपुण्य हो, तभी यह तुम्हारी सहायता करेगा।'' कहकर मुनि ने उसे खड्ग सौंप दिया।

शशिकांत ने मुनि के चरण छुए और अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी। राजधानी पहुँचते-पहुँचते अंधेरा छा चुका था। उसने एक सराय में रहने के लिए व्यवस्था कर ली। उस सराय की मालकिन एक बूढ़ी औरत थी। दूसरे ही दिन विजयदशमी उत्सव शुरू हुए। राजा के निकट के एक रिश्तेदार ने खड्ग युद्ध में सबको हरा दिया। उसका नाम था चक्रधर। उसके शौर्य से राजा बहुत ही प्रसन्न हुए। वे उसे खड्गवीर की उपाधि देने ही वाले थे कि शशिकांत ने प्रवेश करते हुए कहा, ''महाराज, क्षमा चाहता हूँ। मेरे आने में थोड़ी देरी हो गयी।'' कहते हुए उसने म्यान से खड्ग निकाला।

यह देखते ही चक्रधर क्रोधित होकर बोला, ''कौन है यह? देखने में ग्रामीण लगता है। खड्ग युद्ध में मुझ जैसे शूर से लड़ने का साहस! अगर मैं हार जाऊँगा तो राज्य छोड़कर चला जाऊँगा,'' कहते हुए उसने म्यान से खड्ग निकाला। उपस्थित लोग आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे। राजा के पास बैठी उनकी इकलौती पुत्री मणिकर्णिका मुस्कुराने लगी।

खड्ग युद्ध शुरू हो गया। शशिकांत ने आसानी से चक्रधर के वारों का मुक़ाबला किया। पंद्रह मिनटों के अंदर ही उसने उसे हरा दिया। फिर उसने खड्ग को अपनी आँखों से लगाया।

किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि चक्रधर की यों हार होगी। दर्शकों सहित महाराज और

राजकुमारी आश्चर्य में डूब गये। बचन के अनुसार चक्रधर उसी समय वहाँ से चला गया।

चक्रधर अद्वितीय खड्गबीर माना जाताथा। उसकी हार ने सबको आश्चर्य में डाल दिया, सथ ही सबने बड़े ही उत्साह के साथ शशिकांत का तालियाँ बजाते हुए स्वागत किया।

राजा ने, तुरन्त खड्ग बीर की उपाधि शशिकांत को प्रदान किया और शाम को उद्यानबन में उससे मिलने के लिए उसे निमंत्रित किया।

राजा, युवरानी मणिकर्णिका, प्रधान मंत्री व आस्थान पंडित जब राजभवन पहुँचे तब राजा ने उन सबसे कहा, ''देखने में बड़ा ही सुंदर और सुशील लगता है। हट्टा-कट्टा है। कहता है कि किसी गाँब से आया हूँ। पर, मुझे लगता है कि यह शिक्षित नहीं है।''

मंत्री ने कहा, ''महाराज, यह युवक एक सराय में रहता है। हमारे गुप्तचरों ने इसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की। यह शशिकांत कभी संपन्न परिवार का था, पर परिस्थितियों ने उसे अनाथ बना दिया। अपना खड्ग कौशल प्रदर्शित करके हमारे आस्थान में नौकरी पाने के उद्देश्य से यहाँ आया है। जानकारी मिली है कि अन्य विद्याओं में भी यह प्रवीण है।''

राजकुमारी यह सब कुछ ध्यान से सुन रही थी। मुस्कुराती हुई उसने मंत्री को देखा।

प्रतियोगिताओं को शुरू करने के पहले ही राजा ने घोषणा की थी कि जो सबको हरायेगा, उसका बिबाह राजकुमारी से होगा। उनका पूरा-पूरा विश्वास था कि चक्रधर ही जीतेगा। परंतु जो हुआ, उसकी कल्पना उसने की ही नहीं थी।

शाम को, जब राजा, युबरानी, मंत्री, शशिकांत और आस्थान पंडित उद्यानबन में उपस्थित थे, तब गुप्तचरों का सरदार वहाँ आया और बोला, ''महाराज, चक्रधर अभी राज्य की सरहदों पर बिद्रोह करने के लिए लोगों को इकट्ठा कर रहा है। उसका कहना है कि मांत्रिक के दिये महिमावान खड्ग के कारण ही उसकी हार हुई है। यह कहते हुए वह लोगों को इकट्ठा कर रहा है कि मैं राजा के बिरुद्ध बिद्रोह करूँगा, खुद राजा बनूँगा और मणिकर्णिका से बिबाह करके ही रहूँगा।''

यह सुनकर राजा चकित रह गया। आश्चर्य प्रकट करते हुए उसने कहा, ''मेरे ही सगे आदमी ने मेरे बिरुद्ध बिद्रोह करने की ठान ली!''

आस्थान पंडित ने मुस्कुराते हुए कहा, ''महाराज, आप बिल्कुल निश्चिंत रहिये। हमारे बिरुद्ध वह जो दुष्प्रचार कर रहा है, उससे हमें कोई हानि नहीं पहुँचेगी, उल्टे हमें लाभ होगा। जब अड़ोस-पड़ोस के शत्रु राजाओं को मालूम हो जायेगा कि होनेवाली महारानी के पति के पास एक महिमावान खड्ग है, तब वे हमारी ओर आँख उठाकर देखने की भी जुर्रत नहीं करेंगे।'' फिर राजकुमारी और शशिकांत को देखते हुए कहा, ''मैंने जो कहा, समझ गये न?''

दोनों ने खुश होते हुए सिर हिलाया।

वेताल ने कहानी बता चुकने के बाद विक्रमार्क से कहा, ''आस्थान पंडित ने जो कहा, उसमें युक्ति व वाक् चातुर्य मात्र दिखते हैं। वास्तविकता नहीं। चक्रधर को कैसे मालूम पड़ा कि शशिकान्त का खड्ग महिमावान है। मेरे इन संदेहों के उत्तर जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''आस्थान पंडित की बातों में युक्ति और चमत्कार से बढ़कर वास्तविकता है। चक्रधर ने घोषणा की थी कि हारने पर राज्य छोड़कर चला जाऊँगा पर वह हार सह नहीं सका। इसीलिए वह प्रचार करने लगा कि शशिकांत की जीत का कारण उसकी वीरता नहीं, उसका महिमावान खड्ग है। यह एक सच्चे वीर के लक्षण नहीं हैं। उल्टे वह, स्वार्थवश राजा के बिरुद्ध बिद्रोह करने के लिए लोगों को इकट्ठा करने लगा। इससे स्पष्ट होता है कि उसकी बुद्धि कुटिल है। आस्थान पंडित ने ठीक ही कहा कि उसके प्रचार से राज्य को हानि नहीं पहुँचेगी, उल्टे लाभ ही होगा। मुनि ने स्पष्ट रूप से शशिकांत से बताया था कि यह महिमावान खड्ग तभी तुम्हारी सहायता करेगा, जब तुममें स्वयं धैर्य और साहस हों और खड्ग चलाने में प्रावीण्य हो। शशिकांत में ये गुण कूटकूटकर भरे हुए हैं। उसके हारने का सवाल ही नहीं उठता। राज्य पर कोई भी आपदा नहीं आयेगी।''

राजा के मौन-भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा बैठा।

(आधार : सुचित्रा की रचना)

वायानाड के जैन मन्दिर

केरल के केलीकट तथा कन्नूर जिलों, तथा तमिलनाडु के नीलगिरि की सीमाओं से लगे एक पहाड़ी जिला वायानाड में अनेक जैन मन्दिर हैं जिनमें अधिकांश अभी तक भग्नावशेष के रूप में पड़े हैं।

सुलतान की बैटरी एक मात्र अपवाद है जो अब कुछ वर्षों से भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अन्तर्गत है।

विश्वास किया जाता है कि यह मन्दिर बारहवीं और चौदहवीं शताब्दी के बीच निर्मित किया गया था। पूर्ण रूप से जीर्णोद्धार के बाद अब यह पर्यटकों, तीर्थयात्रियों तथा पुरातत्वज्ञों को प्रदर्शित करने के लिए तैयार है।

यह मन्दिर दक्षिण भारत में जैन संस्कृति के कुछ अवशेषों में से एक है।

ऐतिहासिक अभिलेखों से पता चलता है कि यह मन्दिर मैसूर हीरो टीपू सुलतान के आक्रमण के समय आयुध भण्डार के रूप में प्रयुक्त होता था। पहले इसका मूल नाम गणपतिवट्टोम था, बाद में यह सुलतान की बैटरी के नाम से लोकप्रिय हो गया।

हाल में, मन्दिर के कूप का जीर्णोद्धार करते समय दो मूर्त्तियाँ मिलीं – एक श्वेत संगमरमर में महावीर जैना की तथा दूसरी काले संगमरमर में उत्कीर्णित एक सिर की।

आन्ध्रप्रदेश की एक लोक कथा

भाग्य आखिर में खुल गया !

राजा वीरभद्र बड़ा दयालु शासक था। जो सचमुच जरूरतमन्द होते थे उन्हें आर्थिक मदद देने में वह कभी सोच-विचार नहीं करता था। जैसे जब कोई नया व्यापार आरम्भ करना चाहता था अथवा कोई अपने परिवार को लम्बी तीर्थयात्रा पर ले जाना चाहता था अथवा कोई बहुत दिनों से रोगग्रस्त रहता था और चिकित्सा के लिए धन का अभाव हो जाता था, तब वह निःसंकोच उनकी मदद कर दिया करता था।

आश्चर्य कि वे सभी राजा के पास वापस जाकर कृतज्ञता पूर्वक कहते कि उनका नया व्यापार बढ़ रहा है, कि उनके परिवार ने अनेक तीर्थस्थलों के दर्शन कर देवताओं के आशीर्वाद लिये हैं अथवा कि वह अब रोगमुक्त हो गया है और जीवन निर्वाह के लिए काम करने योग्य है। राजा को यह देखकर प्रसन्नता होती थी कि समय पर दी गई उसकी मदद से वांछित परिणाम मिल गया।

लेकिन उसे एक बात का दुःख रह गया। वीरभद्र का दूर के रिश्ते में एक चचेरा भाई था, वीरमूर्ति, जो बहुत गरीब था। राजा उसकी सचमुच मदद करना चाहता था, परन्तु वह व्यक्ति उसकी मदद से पूरा लाभ नहीं उठा पाता था। वीरमूर्ति एक अच्छा शिकारी था और भिन्न-भिन्न विषयों पर कविताएँ भी बनाता था और राजा को सुनाता था। राजा को कविता बहुत प्रिय थी। वीरमूर्ति जब भी आखेट से वापस आता या कविता सुनाता तो राजा उसे पुरस्कार देता था। लेकिन धन का उपयोग करने से पहले ही या तो उसे चोर ले जाता अथवा मार्ग में उसका थैला खो जाता। इस प्रकार वह हमेशा गरीब का गरीब ही बना रहा। जब भी वह महल में आता तो वह मैले-कुचैले कपड़ों में होता अथवा भूखा-प्यासा रहता।
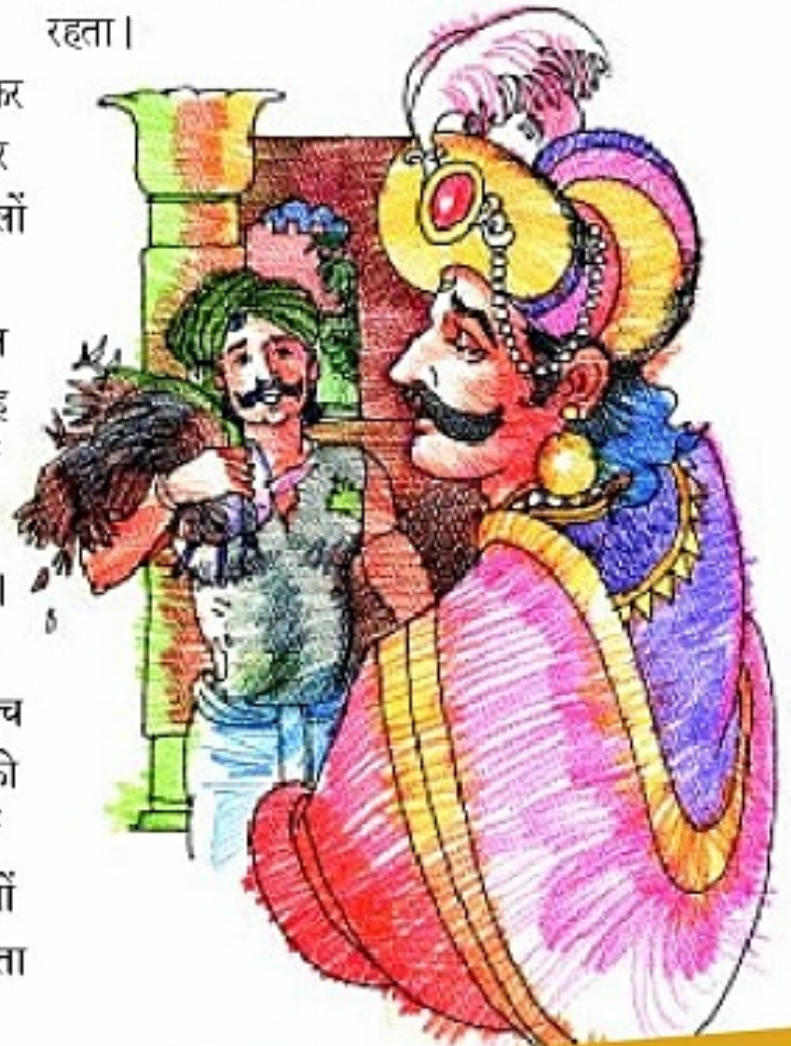
एक दिन, वीरमूर्ति ढेर सारे शिकार के साथ महल में आया। वीरभद्र उस पर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपने दरबारियों के सामने उसे पुरस्कार देना चाहा। इसलिए उसने उन सबको बुला कर कहा, ''आप सब मेरे चचेरे भाई वीरमूर्ति को जानते हैं। आज उसने ढेर सारे शिकार मार कर अपनी बहादुरी दिखाई है। मैं आप सब के सामने इसे पुरस्कार देना चाहता हूँ।'' तब राजा ने विधिपूर्वक उसे एक चमकदार नारंगी भेंट की और मुस्कान के साथ उसे विदा किया। वीरमूर्ति ने झुककर राजा को धन्यवाद दिया और दरबार से बाहर निकल गया।

दरबार में कानाफूसी होने लगी। राजा अपने गरीब चचेरे भाई के साथ शरारत तो नहीं कर रहे हैं? राजा ने कानाफूसी सुन ली, लेकिन उस पर ध्यान नहीं दिया। न तो चचेरे भाई को और न ही दरबारियों को यह खबर थी कि पुरस्कार में दी गई नारंगी साधारण नहीं थी और उसमें मूल्यवान रत्न थे।

वीरमूर्ति ने पुरस्कार के बारे में दुबारा नहीं सोचा। आखिर राजा ने दरबारियों के सामने उसकी बहादुरी की तारीफ की। उसके लिए यही बहुत बड़ी बात थी। मामूली नारंगी से यह कहीं अधिक बड़ा पुरस्कार था। उसे वह अपने थैले में डाल घर की ओर चल पड़ा।

मार्ग में उसे एक भिक्षु मिला। उसने अपना कटोरा उसके सामने बढ़ा दिया। वीरमूर्ति के पास पैसे नहीं थे, इसलिए उसने थैले से नारंगी निकाली और भिखारी के कटोरे में डाल दी। ''तुम्हें भूख लग रही होगी, इसे खा लो।'' यह कह कर वीरमूर्ति चलता बना।

भिक्षु यह देखकर आश्चर्य करने लगा कि नारंगी असामान्य रूप से भारी है। वह बहुत चमकदार थी, इसलिए उसे राजा के पास ले जाने का उसने निश्चय किया। पहरेदारों ने राजा की दानशीलता को जानते हुए भिक्षु को महल के अन्दर जाने दिया।

जब वह दरबार के अन्दर गया, राजा ने उसे बड़े आदर के साथ बैठाया। भिक्षु ने सुनहली नारंगी निकालते हुए कहा, ''महाराज, कृपया इस गरीब भिक्षु का उपहार स्वीकार करें, किन्तु इसके साथ मेरा आशीर्वाद है। चिरंजीवी भव !''

नारंगी को देखते ही वीरभद्र जान गया कि उसका अभागा भाई नारंगी का मूल्य समझ नहीं

सका। उसने नारंगी स्वीकार कर ली और उसे चाँदी के सिक्कों से भरा एक थैला भेंट किया। भिक्षु राजा को आशीर्वाद देकर चला गया।

जब राजकीय आखेट की घोषणा की गई तब वीरमूर्ति भी आखेटकों में शामिल था। इस बार भी उसने पहले की तरह अनेक शिकार किये। राजा ने पुनः उसे पुरस्कार में नारंगी दी। वीरमूर्ति ने सोचा कि यह दूसरी नारंगी होगी। इसलिए उसे वह थैले में रखकर दरबार से बाहर चला गया। मुख्य द्वार पर पहुँचने से पहले उसे एक दरबारी मिला। वह पान चबा रहा थ। ''क्या तुम्हारे पास और अतिरिक्त पान है?'' वीरमूर्ति ने पूछा। उसने पान के बदले दरबारी को नारंगी दे दी।

दरबारी ने दबी हँसी के साथ उसे स्वीकार कर लिया। वह जानता था कि उसे वह क्या करेगा। वह तुरन्त राजा के पास गया और उसे नारंगी देते हुए बोला, ''यह आप के चचेरे भाई ने मेरे पान के बदले मुझे दिया है। आपने उसे यह नारंगी दो बार दी, लेकिन उसने संभाल कर अपने लिए नहीं रखा। महाराज, उसे मदद करने का कोई फायदा नहीं। वह जिन्दगी में कभी कामयाब नहीं होगा।''

एक और राजकीय आखेट में उसकी बहादुरी के लिए राजा ने उसे तीसरी बार वह नारंगी दी। साथ ही, यह कसम खाई कि यह उसकी आखिरी मदद है। वीरमूर्ति ने जब राजा के हाथ से नारंगी ली तब वह जमीन पर गिरकर कई टुकड़ों में बिखर गई। उसके अन्दर के मूल्यवान रत्न बाहर आ गये।

''क्षमा कीजिए महाराज'', यह कहकर माफी माँगते हुए वीरमूर्ति रत्नों को एक-एक कर चुनने लगा। साथ ही, वह चकित भी था। उसने राजा के चेहरे की ओर देखा। राजा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मेरे भाई, तुम्हारा भाग्य खुल गया है। जब भी मैंने तुम्हें मदद करने की कोशिश की, तुम करीबन इनकार करते रहे। तुमने नारंगी दूसरों को दे दी ! अब तुम धनी बन जाओगे।''

राजा वीरभद्र ने उसे इतना सोना देकर बिदा किया जो उसकी जिन्दगी भर चले। वीरमूर्ति शीघ्र ही एक धनी व्यक्ति बन गया, लेकिन उसने निश्चय किया कि वह भी अपने चचेरे भाई की तरह जरूरतमन्दों की मदद करेगा।

व्यापार में दुनियादारी

धर्मकटक एक छोटा-सा राज्य था। धर्मराज उसका राजा था। वह प्रजा को निजी संतान मानता था। पडोसी राज्यों से भी उसके अच्छे संबंध थे। परंतु, उसकी एक कमज़ोरी थी। वह अपने मंत्रियों व राजकर्मचारियों पर अति विश्वास रखता था। इस वजह से कभी-कभी कष्टों का सामना करना पड़ता था। धर्मकटक राज्य में विविध हस्तकलाओं की अभिवृद्धि हुई। रत्न कम्बल और रेशम की महीन साड़ियाँ दूसरे राज्यों में बेची जाती थीं।

धर्मराज एक दिन अपनी रानी के साथ रथ में आसीन होकर नगर में घूमने निकला। नगरवासियों ने राज दंपति का स्वागत किया। नगर की गलियों से जब वे गुज़र रहे थे, तब रत्नाचारी नामक एक व्यापारी की दुकान में सजाये गये रत्न कम्बलों और रेशम की साड़ियों ने रानी की दृष्टि को आकर्षित किया।

अंतःपुर लौटते ही रानी ने राजा से विनती की कि वे रत्नाचारी की दुकान से कुछ रत्नकम्बल और साड़ियाँ मँगायें। राजा ने अपने महामंत्री को बुलवाया और रानी की इच्छा बतायी औरकहा, ''किसी को भेजकर उन्हें मँगाइये और उनकी क़ीमत भी चुकाने का प्रबंध कीजिये।''

''प्रभु, फौरन ही इसका इंतज़ाम करता हूँ।'' फिर महामंत्री ने कोषाधिकारी को इसकी जिम्मेदारी सौंपी।

कोषाधिकारी ने फ़ौरन यह काम वाणिज्य अधिकारी को सौंपा। वाणिज्य अधिकारी ने यह काम कर वसूल करनेवाले अधिकारी को सौंपा।

सैनिक उस दुकान में गये और रत्नाचारी को इसका समाचार दिया। रत्नाचारी ने कहा, ''राजा आज्ञा दें तो यह दुकान ही उनके सुपुर्द कर दूँ,'' कहते हुए उसने पच्चीस साड़ियाँ और पच्चीस रत्न कम्बल सैनिकों के सुपुर्द कर दिये। साथ ही उसने सैनिकों की पत्नियों के लिए भी दो-दो साड़ियाँ दीं।

वियोगी

''तुमने हमारी पत्नियों के लिए भी दो-दो साड़ियाँ दीं। परंतु, हमारे उच्च अधिकारियों के लिए क्या दोगे?'' सैनिकों ने पूछा।

लाचार रत्नाचारी ने वाणिज्य अधिकारी, कर अधिकारी की पत्नियों के लिए भी साड़ियाँ और कम्बल दिये।

रत्नाचारी उस रात को सो नहीं पाया। एक-एक कम्बल की क़ीमत कम से कम लाख अशर्फ़ियाँ थीं। कुछ दिनों तक वह रक़म पाने का इंतज़ार करता रहा। पर, कोई फ़ायदा नहीं हुआ। उसे लगा कि सैनिकों या अधिकारियों को बताने से कोई लाभ नहीं होगा। उसने अपने एक विश्वस्त नौकर के द्वारा कोषाधिकारी को उनके दामों का विवरण देते हुए एक प्रार्थना-पत्र भेजा।

कोषाधिकारी ने वह प्रार्थना-पत्र वाणिज्य अधिकारी को दिया। वाणिज्य अधिकारी ने कर अधिकारी को बुलाकर उसे खूब डाँटा।

रत्नाचारी इस आशा में था कि दूसरे ही दिन उसकी रक़म उसे मिल जायेगी, पर ऐसा नहीं हुआ। वह इसे अपना अपमान मानने लगा।

वाणिज्य अधिकारी के गुप्तचर दुकान में आये और पूरी दुकान की छान-बीन की। उन्होंने फैसला सुनाया कि कर चुकाया नहीं गया। उन्होंने यह भी फैसला सुनाया कि उसके पास अपार संपत्ति है, जिसका हिसाब कोषाधिकारी को समर्पित किया नहीं गया। बस, उन्होंने रत्नाचारी को क़ैद कर लिया और जेल में ठूँस दिया।
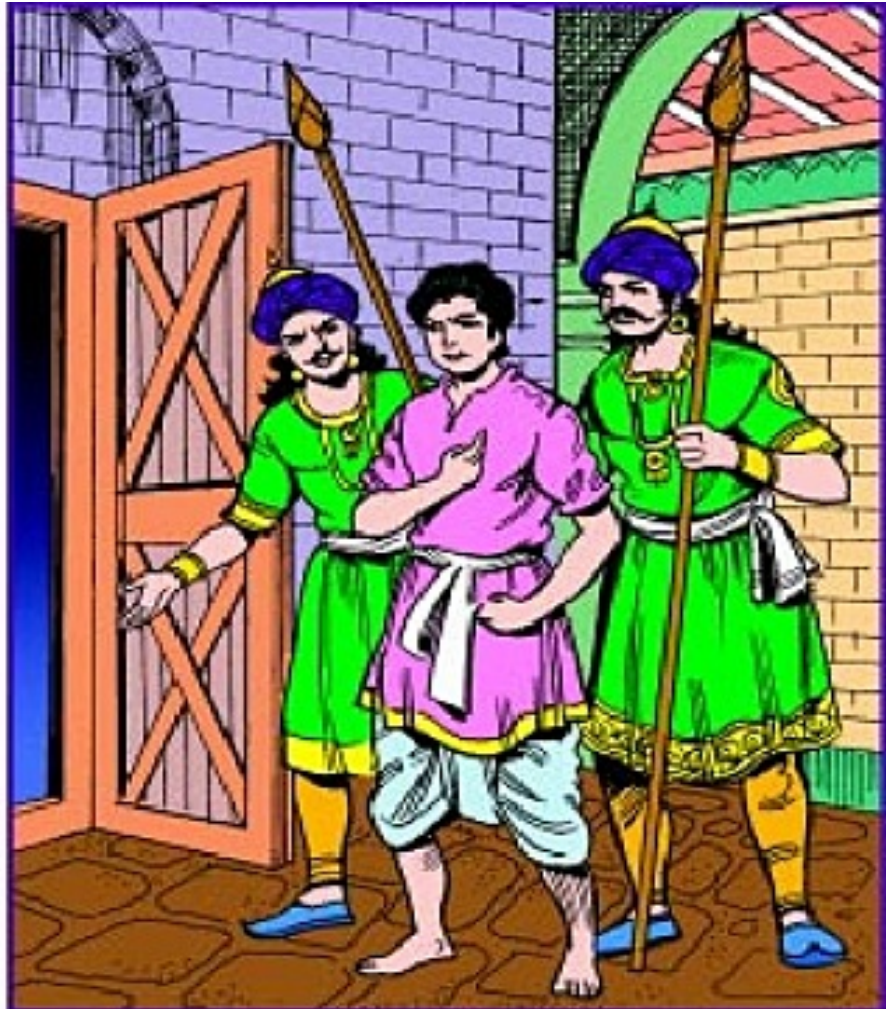
रत्नाचारी की पत्नी और बच्चे इस घटना को लेकर परेशान हो उठे। उनकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए। वे अपने दुर्भाग्य पर, अपनी बिबशता पर रोने-बिलखने लगे। ठीक उसी दिन शाम को, काशी की यात्रा पर गया हुआ रत्नाचारी का पिता माणिक्याचारी घर लौटा। विषय की जानकारी पाकर वह कोषाधिकारी के मामा से मिला, जो उसका बाल्य मित्र था। उसे लेकर वह कोषाधिकारी के पास गया और अपने बेटे की तरफ़ से क्षमा माँगी।

उसने कोषाधिकारी से बताया, ''मेरे पुत्र रत्नाचारी के पास जो अपार संपत्ति है, वह उसकी कमाई नहीं है, बल्कि उसके पुरखों से प्राप्त संपत्ति है। मेरा बेटा बिना चूके कर अदा कर रहा है।'' इसके समर्थन में उसने सबूत भी प्रस्तुत किये

और आख़िर वह अपने बेटे को जेल से बाहर ले आने में सफल हुआ।

यह सब होने में एक महीना लग गया। उस समय रत्नाचारी का व्यापार बरबाद हो गया। उसके साथ जो अन्याय हुआ, उसे लेकर रत्नाचारी बहुत दुखी हुआ। तंग आकर उसने एक दिन पिता से कहा, ''हमारे साथ जो अन्याय हुआ है, उसकी शिकायत खुद राजा से करूँगा।''

यह सुनते ही उसके पिता ने लंबी सांस खींचते हुए कहा, ''तुम एक व्यापारी का पुत्र हो, इतने लंबे समय से व्यापार करते आ रहे हो, पर तुमने दुनियादारी नहीं सीखी। दुनियादारी के न होने के कारण ही यह सब हुआ है। आसानी से हल हो सकनेवाली समस्या को तुमने जटिल बना दिया। रानी को तुमने जो रत्नकम्बल और साड़ियाँ भेजीं, उनकी क़ीमत को वसूल करने के लिए तुम्हें कोषाधिकारी को प्रार्थना-पत्र भेजना नहीं चाहिये था। धन भी गया, इज़्ज़त भी खो दी।''

''लाख अशर्फ़ियों की क़ीमत की चीज़ों को कैसे छोड़ दूँ? हमें इतनी रक़म कौन देगा?'' परेशान रत्नाचारी ने पूछा।

''लाख नहीं, करोड़ों अशर्फ़ियाँ कमा सकते थे। यह संभव होता, अगर राजा का थोड़ा-सा विश्वास पा लेते।'' पिता ने कहा।

''तो क्या इसका यह मतलब है, कि हमें जो मिलना है, उसे न माँगें? क्या वह अपराध है?'' रत्नाचारी ने क्रोध-भरे स्वर में पूछा।

''माँगना अपराध नहीं। माँगने की पद्धति में दुनियादारी नहीं निभाई। इसी वजह से हमारा धन नष्ट हुआ, हमारी इज़्ज़त गयी,'' पिता ने कहा।

''मेरी समझ में नहीं आता कि आप कहना क्या चाहते हैं।'' बेचारे रत्नाचारी ने पूछा।

''राजा अच्छे हैं, पर इसका यह मतलब नहीं कि उनके परिवार के सब सदस्य अच्छे हैं। व्यापार के गुरों को जानना है और दुनियादारी बरतनी है। वास्तविकता एक तरफ़ है तो व्यापार दूसरी तरफ़। दोनों में आकाश-पाताल का अंतर है। अब भी अनुभव में कच्चे हो।'' पिता ने कहा।

''ठीक है। बताइये कि मुझे उस समय क्या करना था? आप बात को घुमा-फिराकर कहने के बदले मुझसे साफ़-साफ़ कहिये,'' रत्नाचारी ने दृढ़ स्वर में कहा।

''तुमने शुरुआत में ही बहुत बड़ी ग़लतीकी। रानी के लिए जो कम्बल और साड़ियाँ दीं, उनके साथ तुमने सैनिकों को भी दिया। बड़े अधिकारियों के लिए भी भेजा। तुमने सोचा कि इससे वे खुश होंगे और तुम्हारी तरफ़दारी करेंगे। ऐसा न करके तुम उन्हें लेकर रानी के पास सीधे चले जाते तो तुम्हें उनकी क़ीमत भी मिल जाती और तुम्हारा अच्छा नाम भी हो जाता। तुम प्रचार भी कर सकते थे कि रानी जो साड़ियाँ पहनती हैं, वे हमारी दुकान में उपलब्ध हैं। इससे हमारा व्यापार बढ़ जाता, अधिकाधिक कमा पाते। समझे मेरी बात?'' पिता ने कहा।

''हाँ, आपने बिलकुल ठीक कहा,'' वहाँ उपस्थित रत्नाचारी की पत्नी ने ससुर की दलीलों का समर्थन करते हुए कहा।

पिता की दुनियादारी पर रत्नाचारी स्तम्भित रह गया।

इस घटना के दस दिनों के बाद, रत्नाचारी के पिता को कोषाधिकारी से बुलावा आया। कोषाधिकारी ने कहा, ''तुम्हारे पुत्र रत्नाचारी के साथ जो अन्याय हुआ है, उसकी ख़बर मैंने राजा को दी। उन्होंने आवश्यक तहकीकात की, दोषियों को सज़ा दी और आदेश दिया कि रत्नाचारी को उसकी वास्तविक रकम से दुगुनी दी जाए।'' कहते हुए उसने दो लाख अशर्फ़ियाँ उसे दीं।

इतनी भारी रक़म को देखकर रत्नाचारी और उसकी पत्नी बेहद खुश हुए।

समाचार झलक

चिड़ियाघर में जन्मदिवस– समारोह

आस्ट्रेलिया में ब्रिस्बेन के चिड़ियाघर में विगत १५ नवम्बर को एक जन्मदिवस समारोह मनाया गया। ''जन्मदिनवाली लड़की'' और कोई नहीं बल्कि हैरियत नामक एक की मादा कछुआ थी जो उस दिन १७५ वर्ष की हो गई। उसे दावत में गुलाबी जवाकुसुम फूल का केक दिया गया। उसके दर्शकों को भी उस दिन केक परोसा गया। हैरियत को उस दिन से ख्याति मिल गई जिस दिन वैज्ञानिक चार्ल्स डारविन ने सन् १८३५ में विशालकाय कछुओं के प्रसिद्ध जायण्ट गालापैगोस टापू में इसकी खोज की थी। हैरियत को अनेक बार घर बदलना पड़ा। पिछले १७ वर्षों से उसका ब्रिस्बेन चिड़ियाघर से घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है। उसकी देखभाल करनेवाले स्टिव अरविन के अनुसार उसके २५ वर्ष तक और जीवित रहने की पूरी सम्भावना है। प्रसंगवश विश्व का सबसे अधिक दीर्घायु पशु एक अन्य कच्छप अद्वैत्या-१ है जो कोलकाता के अलीपुर चिड़ियाघर में रहता है। विश्वास किया जाता है कि उसकी उम्र २५५ वर्ष होगी। ऐसा लगता है कि गवर्नर जनरल लॉड क्लाइव ने इसे इंग्लैण्ड से लाया था और १८७५ में कोलकाता चिड़ियाघर को दे दिया था।

भारतीय महिला अन्तरिक्ष यात्री

भारतीय मूल की ३५ वर्षीय एस.वनजा शिवसुब्रह्मणियम पेशे से इंजीनियर है और मलयेशिया में बस गई है। वह अगले वर्ष में आयोजित होनेवाले अन्तरिक्षीय पर्यटन में प्रशिक्षण तथा अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन (आई.एस.एस.) में प्रवास के लिए चुने गये चार उम्मीदवारों में से एक है। अन्य तीनों के साथ, जो उसी देश के सभी पुरुष हैं- वह अभी रूसी स्पेस एजेंसी में डॉक्टरी तथा तकनीकी जाँच के लिए मास्को जाने के मार्ग में है।

चन्दामामा प्रश्नावली-९

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION,
Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

*सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. एक परिवार में सिर्फ एक ही सदस्य भाग लें, ४ अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ५. लिफ़ाफे पर **चन्दामामा प्रश्नावली-९** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ६. अक्तूबर महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ७. दिसंबर महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. क्या जानते हैं, विष्णु का निर्वचन क्या है?

२. प्राचीन ग्रीक महिलाओं ने जिस विवाह अधिदेवी की पूजा की, उसका नाम क्या है?

३. पके पपीते में औषधीय गुणों से भरा श्वेत पदार्थ है, उसे क्या कहते हैं?

४. ''मातृ-प्रेम से वंचित मुझे तुमने माता के समान वात्सल्यपूर्ण व्यवहार दिया है। तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी नहीं भूल सकता। यदि मुझे सिद्धि प्राप्त हो गई तो इस प्रयत्न में सहयोग देनेवाले प्रथम व्यक्ति तुम ही होगे,'' सिद्धार्थ ने यों किस सारथी को अपनी कृतज्ञता जतायी? उस सारथी का क्या नाम है?

५. दक्षिण भारत के एक स्टेडियम को धूम्रपान निषेध का क्षेत्र घोषित किया गया। वह स्टेडियम कहाँ है?

६. ''भगवान नहीं चाहते कि संसार में अशान्ति रहे। वे चाहते हैं कि उनके बच्चों के लिए शान्ति, समृद्धि और सुशासन बना रहे।'' किस पर्शियन शासन ने अपने शिलालेखों में यह लिखा?

७. यह चित्र किस कहानी का है?
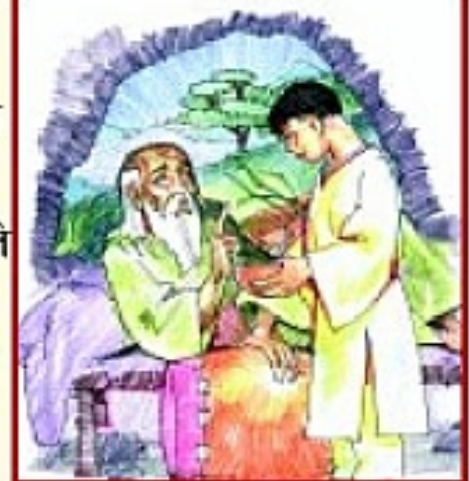
रंगा की संपदा

अवंती नगर के समीप के अरण्य प्रांत में स्थित एक गाँव में रंगा और माधव नामक दो मित्र रहा करते थे। उनके घर भी अग़ल-बग़ल में ही थे। दोनों जंगल जाते थे और जड़ी-बूटियों को बटोरते थे। उन्हें नगर ले जाकर वैद्यों को बेच आते थे। जो आमदनी होती थी, उससे अपने परिवार चलाते थे।

दोनों मेहनती थे। माधव बड़ा ही भक्त था। वह सपने देखा करता था कि किसी दिन मुझपर भगवान की कृपा होगी और कष्टों से निकल जाऊँगा। उसका मानना था कि वह दिन भविष्य में ज़रूर आयेगा और भगवान उसे सुखी जीवन बिताने का अवसर अवश्य प्रदान करेंगे। रंगा भी दैवभक्त था पर उससे भी अधिक वह परोपकारी था।

जंगल और गाँव के बीच में एक नाला बहता था। उसके किनारे के नीम के पेड़ के तले देवी का मंदिर था। जंगल में प्रवेश करने के पहले दोनों मित्र भक्तिपूर्वक देवी को प्रणाम करते थे। जब वापस लौटते थे तब जंगल में मिले दो-तीन फल देवी की मूर्ति के सामने रख देते थे। यों दिन गुज़रते गये।

एक दिन जब वे जंगल से लौट रहे थे, तब मंदिर के सामने उन्होंने एक अंधे वृद्ध को देखा। कमज़ोरी के कारण वह खड़ा भी नहीं हो पाता था। रंगा ने जैसे ही वृद्ध को देखा, पीने के लिए पानी ले आया और उसकी प्यास बुझायी। फिर वे फल खाने को उसे दिये और नगर की ओर निकल पड़ा।

लेकिन, माधव ने बूढ़े की कोई सहायता नहीं की। उसे उस स्थिति में देखकर उसको उसपर दया भी नहीं आयी। भक्तिपूर्वक देवी को प्रणाम किया और जड़ी-बूटियाँ बेचने नगर की ओर निकल पड़ा।

दूसरे दिन भी वह बूढ़ा आदमी वहीं था। रंगा अपने साथ जो रोटियाँ लाया था उनमें से दो उसे दे दी। जंगल से लौटने के बाद उसने दो-तीन फल भी उसे दिये और फिर वहाँ से चला गया।

तीसरे दिन शाम को, रंगा के घर के पीछे का खंभा बाहर निकल आया, जिसमें वह गाय को बांधता था। उसे फिर से गाड़ने के लिए वह ज़मीन खोदने लगा। तब कोई आवाज़ आयी। उसने गड्ढे में हाथ रखकर देखा तो उसे तांबे का एक घड़ा मिला, जिसमें सोने की अशर्फ़ियाँ भरी पड़ी थीं। उन्हें देखते ही उसे लगा कि यह सब देवी की कृपा है और अब भविष्य में आराम से ज़िन्दगी गुज़ार सकता है।

दूसरे दिन सबेरे ही, यह विषय बताने वह उस वृद्ध से मिलने निकला और साथ ही उसे देने को कुछ रोटियाँ भी लेता हुआ गया। परंतु, वह वृद्ध वहाँ नहीं था। रंगा ने देवी की पूजा की और घर लौटा। जो धन उसे मिला, उससे थोड़ी सी ज़मीन खरीद ली और खेती करने लगा। जब-जब मौक़ा मिलता, जंगल चला जाता और जड़ी-बूटियों को बटोरकर उन्हें नगर जाकर बेच भी आता था। अब वह परिवार सहित सुखी जीवन बिताने लगा।

यह सब देख कर माधव को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक दिन वह जंगल से लौटा, नाले के पानी में हाथ-मुंह धो लिया और देवी के मंदिर के सामने बैठकर कहने लगा, ''माते, मैं भी भक्तिपूर्वक तुम्हारी पूजा करता हूँ। फिर भी तुमने मुझपर दया नहीं दिखायी। क्या मुझे आगे भी ऐसी ही ज़िन्दगी गुज़ारनी होगी?'' निराशा में ग्रस्त वह थका-मांदा वहीं पेड़ से सटकर लेट गया। तब उसने एक सपना देखा। सपने में देवी माँ उससे कहने लगी:

''तुममें भी मेरे प्रति श्रद्धा और भक्ति है। मैं अवश्य ही तुमसे प्रसन्न हूँ। परंतु, असहाय मनुष्यों के प्रति तुममें दया, करुणा नहीं है। बेचारे अंधे वृद्ध की तुमने सहायता ही नहीं की, उसकी दुस्थिति पर तुममें दया पैदा नहीं हुई। मेरी पूजा मात्र करने से क्या लाभ? तुम जैसे लोगों को संपदाएँ प्राप्त हो जाएँ तो उनसे दूसरों को क्या लाभ? तुम्हारे मित्र रंगा जैसे आदमी को संपदाएँ प्राप्त हो जाएँ तो वह अभावग्रस्तों व असहायों की भरसक सहायता करेगा, दीन-दुखियों की सेवाएँ करेगा। इसी कारण, वह संपदाएँ प्राप्त कर पाया।''

माधव इन बातों को सुनकर चौंककर उठ बैठा। उसने दीन स्वर में कहा, ''माते, तुमने मेरी आँखें खोल दीं। आगे से ऐसी ग़लती नहीं करूँगा। ज़रूरतमंदों की मदद अवश्य करूँगा।'' उसने एक और बार भक्तिपूर्वक देवी के चरणों का स्पर्श किया और घर की ओर चल पड़ा।

- के. राजीव रेड्डि, आन्ध्र प्रदेश

महान पुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - १०

सच्ची और साहसपूर्ण सम्मति

जनरल रॉबर्ट ली

आज का अमरीका सन १८६१ और १८६५ में दो शिबिरों में बँटा हुआ था। गुलामी के प्रश्न पर दोनों पक्षों में संग्राम हो गया, क्या परम्परा को बनाये रखें या इसे समाप्त कर दें। उत्तर के राज्यों को, जो उन्मूलन के आदर्श के समर्थक थे, यूनियन कहा जाता था और दक्षिण के राज्यों को कॉनफिडॅरेसी। दोनों शिबिरों में गृह युद्ध दक्षिण के कॉनफिडॅरेसी के टूटने तक चलता रहा।

लेकिन यह महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना इस लेख का विषय नहीं है। हमलोग यहाँ कॉनफिडॅरेसी के प्रेसिडेण्ट मि. जेफरसन डेबिस और उसकी सेना के मुख्य सेनाध्यक्ष जनरल रॉबर्ट ली के बीच एक संक्षिप्त संवाद की चर्चा कर रहे हैं।

एक दिन प्रेसिडेण्ट ने जनरल को बुलाया और कहा कि एक बहुत महत्वपूर्ण विभाग में सर्वोच्च पद रिक्त है। उसने एक व्यक्ति का नाम लिया जिसे हम मि.एक्स कह सकते हैं और जनरल को बताया, "जैसा कि आप जानते हैं, उस विभाग के सर्वोच्च पद के लिए व्यक्ति को पूरी तरह से ईमानदार, सच्चा और साहसी होना चाहिये। क्या आप समझते हैं कि मि.एक्स उस पद के लिए उपयुक्त होंगे? मैं आपकी राय के अनुसार काम करूँगा; उसे नियुक्ति पत्र भेज दीजिये, केवल तभी जब आप अनुमोदित करें।"

प्रेसिडेण्ट का सचिव जनरल ली को देखकर साभिप्राय मुस्कुराया। सचिव को विश्वास था कि जनरल ली इस प्रस्ताव से सहमत नहीं होगा, हालांकि यह पद मि.एक्स के लिए सर्वोच्च गौरव का प्रतीक होगा।

''स्पष्ट रूप से कहें तो, सर, आप इस पद के लिए इससे बढ़िया चुनाव कर ही नहीं सकते थे। मि. एक्स सचमुच ही सही व्यक्ति है। ऐसी नाजुक अवस्था में हमलोगों को उसी व्यक्ति के समान कार्यकारी प्रशासक की आवश्यकता है। वह हमारे उद्देश्यों की पूर्ति में हमें कभी निराश नहीं करेगा।'' जनरल ली ने अपना विचार प्रकट किया।

''हे भगवान!'' प्रेसिडेण्ट के सचिव के मुँह से यह उद्गार निकल गया।

''क्या बात है?'' जनरल ली ने पूछा, तभी प्रेसिडेण्ट डेविस उत्सुक होकर अपने सचिव को घूरने लगे।

''जनरल'', सचिव बोला, ''मैं आपको बता दूँ कि मि.एक्स कभी भी आपके बारे में अच्छी राय नहीं रखते। जब भी अवसर मिलता है, वह आपके विरुद्ध भटक उठते हैं और आप को घमण्डी, आडम्बरी यहाँ तक कि अयोग्य बताते हैं। और आप उस प्रतिष्ठित पद के लिए उसके नाम का अनुमोदन करते हैं!''

''मैं जानता हूँ। लेकिन मि. सचिव, प्रेसिडेण्ट ने मि.एक्स के बारे में मेरी राय माँगी है, न कि मेरे बारे में मि.एक्स की राय!'' जनरल का सच्चे अर्थ में यह एक ईमानदार और साहसपूर्ण उत्तर था।

(एम.डी.)

चन्दामामा प्रश्नावली –७ के विजेताएँ (अगस्त २००६)

१. रामू टोपले, छिन्दवाड़ा, म.प्र.

२. अभिषेक मौर्य, छिन्दवाड़ा, म.प्र.

३. मोहित कुमार भाटी, श्री अमीरगढ़, गुजरात.

४. मधु भाटी, सिरोही, राजस्थान.

५. मीनाक्षी, जोधपुर, राजस्थान.

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-७ के उत्तर :

१. कारैक्काल अम्मयार।
२. धर्माचरण।
३. जिगर।
४. डॉ. सर्वेपल्लि राधाकृष्णन।
५. अनंतपुर जिले का गुडिबयालु गाँव।
६. उनकी माँ जीजाबाई, गुरु स्वामी समर्थ रामदास।
७. तमिल लेखक जयकांतन।
८. देवता बहुत खाते थे ।(अन्य देशों बेबीलोन की अनुश्रुत कथाएँ)

पिछवाड़े का पौधा

वल्लभ सेठ रामपुर में गहनों का प्रसिद्ध व्यापारी था। नगर के सब धनी परिवार उसपर पूरा-पूरा विश्वास रखते थे। इसलिए वे सभी प्रकार के आभूषण उसी से खरीदते थे। रामदेव और वासुदेव उसके जुडवें बेटे थे। लंबी प्रतीक्षा के बाद उनका जन्म हुआ, इसलिए वल्लभ सेठ दंपति ने उन्हें बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा। इस वजह से पढ़ाई के प्रति उनकी अभिरुचि नहीं रही। पिता के व्यापार में भी उनकी अभिरुचि नहीं थी। जब देखो, दोस्तों के साथ वे घूमते रहते थे।

उनके इस रवैये को देखते हुए वल्लभ सेठ परेशान व दुखी रहने लगा। उसने एक दिन पत्नी से कहा, ''ये दोनों गैर जिम्मेदार निकले। तुमने इन्हें बड़े ही लाड़-प्यार से पाला-पोसा,बड़ा किया, इसी वजह से वे बिगड़ गये। हमारे मर जाने के बाद ये व्यापार को कैसे संभालेंगे?''

''हमारे पास अपार संपत्ति है। चार पीढ़ियाँ आराम से बैठकर खा-पी सकती हैं। लाड़-प्यार से पले ये लड़के अगर काम नहीं भी करेंगे तो क्या हो जायेगा? आखिर इन्हें कमाने की ज़रूरत भी क्या है?'' सेठ की पत्नी ने कहा।

सेठ को लगा कि इसे लेकर पत्नी से और बातें करना व्यर्थ है, इसलिए वह चुप रह गया।

दो दिनों के बाद सेठ ने अपने दोनों बेटों को बुलाया और उनसे कहा, ''मेरे दोस्त विजय कानपुर में रहते हैं। उनके नाम मैं एक जरूरी ख़त दे रहा हूँ। तुम दोनों जाओ और उन्हें यह ख़त दे आओ। यह बड़ा ही गोपनीय काम है, इसीलिए मैं तुम दोनों को यह कामसौंप रहा हूँ। कानपुर बहुत बड़ा नगर है। उसे भी देख आना।'' दोनों भाई उसी दिन कानपुर निकल पड़े।

ख़त पढ़ने के बाद विजय ने चुपचाप सिर हिलाया। इसके बाद, दोस्त के दोनों बेटों का आतिथ्य सत्कार किया और नगर को देखने के लिए आवश्यक प्रबंध कर दिया। विजय की पत्नी ने भी प्रेम से उनका स्वागत किया। उनकी भी

लक्ष्मीकांत

जुड़वीं बेटियाँ थीं, श्रेष्ठा और श्वेता। सुंदर और होशियार थीं। वासुदेव और रामदेव को वे अच्छी भी लगीं।

एक सप्ताह के बाद, वल्लभ सेठ से विजय के नाम एक ख़त आया, जिसमें उसने अपने बेटों को संबोधित करते हुए लिखा, ''पुत्रो, चार दिनों पहले रात के समय दुकान का पूरा सामान चोर उठाकर ले गये। लोगों ने जो आभूषण मरम्मत के लिए दिये थे, वे अपने आभूषण वापस माँग रहे हैं अन्यथा वे मुझे राजा के पास ले जायेंगे। राजा अवश्य ही मुझे कड़ी सज़ा देंगे। यह अपमान मुझसे सहा नहीं जायेगा, इसलिए मैं और तुम्हारी माँ शहर छोड़कर जा रहे हैं। भगवान की कृपा हो तो फिर कभी मिलेंगे।'' विषय जानकर दोनों बेटे हताश हो गये।

इस विषय को जानने के बाद विजय के व्यवहार में भी बड़ा परिवर्तन आया। उसने कठोर स्वर में दोनों से कहा, ''निकम्मों को बिठाकर खिलाने के लिए मैं तुम्हारे पिता की तरह कोई करोड़पति नहीं हूँ। खुद कोई काम ढूँढ़ लेना और जीविका कमा लेना।''

वे दोनों उस अपमान को सह नहीं सके, पर करें भी क्या? कैसे पेट भरें, क्योंकि उन्हें कोई भी काम आता ही नहीं। इसलिए दोनों ने अपमान निगल लिया और विजय से अभ्यर्थना की कि वे ही कोई काम दिलायें, जिससे उनका गुज़ारा हो सके। विजय ने दोनों के लिए काम का इंतज़ाम किया। राम को काम दिलवाया, अपनी ही कपड़ों
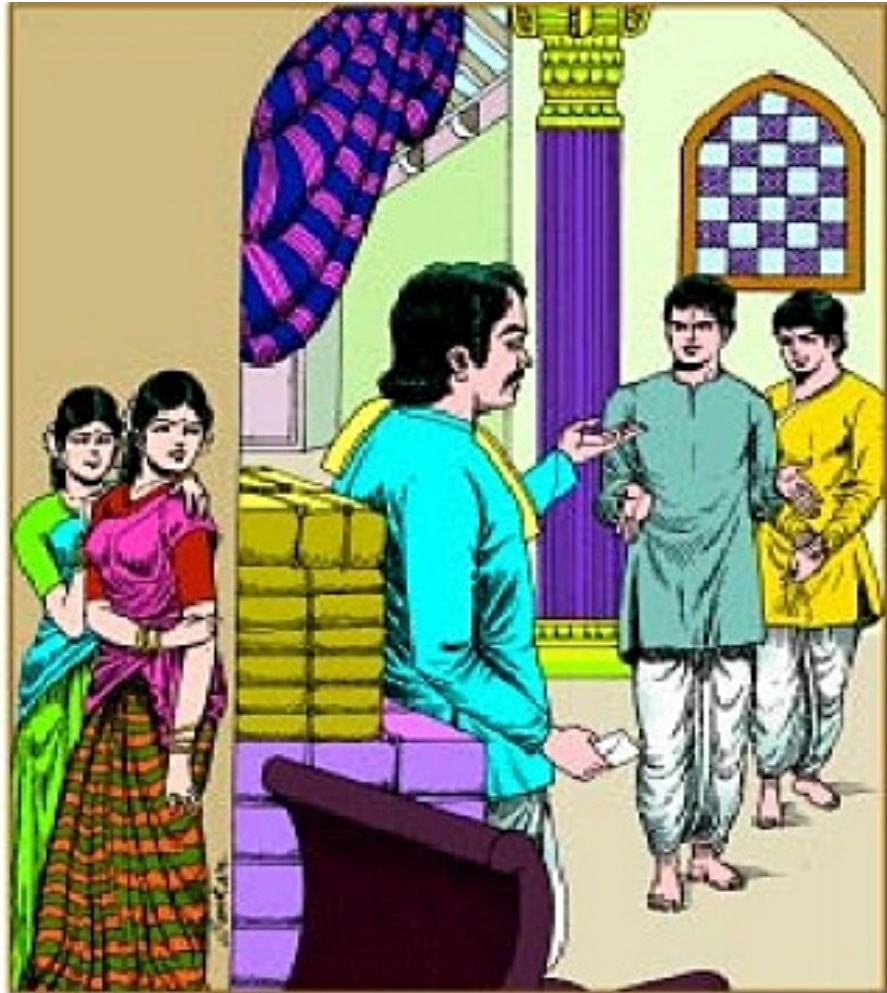
की दुकान में हिसाब लिखने का और वासु को अपनी ही यहाँ माली का काम दिया। उसका काम होगा, उसके बग़ीचे में फलनेवाली तरकारियों को हाट में बेचकर आना। शुरू में तो इन कामों को करने में दोनों को बड़ी तकलीफ़ हुई।

एक दिन रामदेव ने छोटे भाई वासुदेव से कहा, ''देखा भाई, यह विजय कितना कठोर है? हिसाब में दस रुपये क्या कम हो गये, उसने मुझे खाना भी नहीं दिया।''

''हाँ भैय्या, टोकरियाँ भर-भर के तरकारियाँ चार कोस पैदल ढोकर ले जाता हूँ, पर एक गाड़ी का भी इंतज़ाम नहीं करता। इसे मुझपर दया नहीं आती।'' यों वासुदेव ने अपना दुखड़ा सुनाया।

''जो हुआ, भूल जाओ। पिताजी कहा करते

थे कि जो कष्ट सहेगा, किसी न किसी दिन उसे उसका फल भी मिलेगा। हमारे भी अच्छे दिन आयेंगे।'' रामदेव ने भाई को सांत्वना दी।

दिन जैसे-जैसे गुज़रते गये, वैसे-वैसे दोनों भाइयों में काम करने की इच्छा और लगन पैदा होती गयी। साथ ही वे व्यापार की बारीकियाँ भी समझने लगे। विजय की बेटियाँ श्रेष्ठा और श्वेता उन दोनों का आदर करने लगीं। विजय हर महीने उन्हें जो वेतन देता रहता था, उसमें से थोड़ी सी रक़म दोनों ने बचा भी ली।

छे महीनों के बाद वल्लभ सेठ, पत्नी समेत कानपुर आया। माता-पिता को देखकर दोनों बेटों की आँखों में आँसू भर आये। काबिल बेटों को देखर माता-पिता भी बेहद खुश हुए।

वल्लभ सेठ ने विजय से कहा, ''दोस्त, जो संपत्ति लुट गयी थी, मिल गयी। अब हम अपने यहाँ चले जायेंगे। तुम्हारी सहायता और सेवाओं के लिए मेरे हार्दिक धन्यवाद।'' सेठ की बातों के पीछे जो रहस्य छिपा था, वह विजय जान गया और मुस्कुराता रहा।

''अपने बेटों के साथ-साथ अपनी बहुओं को भी ले जाना। यह मेरा सौभाग्य है कि उन्हें उनके योग्य पति मिल गये।'' विजय ने कहा।

वल्लभ ने सहर्ष विजय के प्रस्ताव को स्वीकार किया। विवाह के दूसरे दिन विजय ने एकांत में वल्लभ सेठ से पूछा, ''मेरे कपड़ों के व्यापार से तुम्हारा व्यापार बढ़िया है। तुम मुझसे भी बेहतर व्यापार में दक्ष हो। तुम खुद अपने बेटों को सही मार्ग पर ले आ सकते थे। चोरी के बहाने, तुमने उन्हें मेरे यहाँ क्यों नौकर बनाया?''

''कहते हैं कि अपने पिछवाड़े का पौधा इलाज के काम में नहीं आता। मैं समझ गया कि मेरे बेटे जब तक मेरे पास रहेंगे, तब तक वे मेहनत नहीं करेंगे। जरूरत पड़ने पर ही वे काम करेंगे। और तुमने उस ज़रूरत की सृष्टि की, जिसके लिए मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ।'' वल्लभ सेठ ने स्पष्ट किया।

बहुत ही जल्दी, कम समय में ही रामदेव और वासुदेव ने रामपुर में बहुत नाम कमाया और पिता के योग्य पुत्र साबित हुए।

मनानेवाला

एक दिन चंद ग्रामीण चबूतरे पर बैठकर गपशप कर रहे थे। बालकृष्ण नामक एक लड़का अचानक छींकने लगा। कामेश ने उसे सलाह दी, "हाल ही में मैं जुकाम से पीड़ित था। गोलियाँ खाते ही जुकाम गायब हो गया। जाओ मेरी पत्नी से गोलियाँ लेकर खा लो।" लड़का "हाँ" कहता हुआ वहाँ से चला गया।

"बालकृष्ण किसी की बात सुनता ही नहीं। तुमने तो बड़ी आसानी से उसे मना लिया", एक वृद्ध ने उसकी तारीफ़ करते हुए कहा। अपनी प्रशंसा से कामेश ने उत्साहित होकर कहा, "इस बालक को ही नहीं बल्कि हठी से हठी आदमी को भी मैं अपनी बातों से मनाने की शक्ति रखता हूँ।"

बग़ल में ही बैठे रामेश ने कहा, "दूसरे की बात क्यों करते हो? सामने कोई चीज़ दिखायी पड़े तो मैं उसे सच मान लेता हूँ। पर यह तब तक संभव नहीं, जब तक उसे मानने के लिए मैं तैयार नहीं होता। उदाहरण के लिए मेरे पीछे बरगद का पेड़ है। मुझ से यह मनाकर देखो कि वह नीम का पेड़ है।"

रामेश के पीछे सचमुच ही नीम का पेड़ था, इसलिए कामेश ने रामेश से कहा, "तुम्हारे पीछे तो नीम का ही पेड़ है, उसे बरगद क्यों कहते हो?" चिढ़ता हुआ वह नीम के पत्ते तोड़कर ले आया और उन्हें रामेश को दिखाया। रामेश ने उन पत्तों को देखते हुए कहा, "मानता हूँ, ये नीम के पत्ते हैं। पर इसका क्या भरोसा कि ये पत्ते उसी पेड़ के हैं?" तब कामेश वहाँ उपस्थित लोगों से सबूत देने को कहा। इसपर रामेश ने कहा, "उनसे क्यों कहलाते हो? मेरी आँखें देख सकती हैं, तब दूसरों की बातों को सुनने की क्या ज़रूरत है?"

"ठीक है, पीछे मुड़कर देखो। तुम्हारी आँखें सही-सलामत हों तो वे तुम्हें बता देंगी कि वह नीम का ही पेड़ है," कामेश ने क्रोध के स्वर में कहा।

"पीछे मुड़कर देखने की मेरी इच्छा नहीं है। चाहते हो तो उस पेड़ को मेरे सामने रखना। अन्यथा मान लेना कि तुम मुझे मनाने में असफल हो गये हो।" रामेश की बातें सुनकर सब हँस पड़े।

कामेश फिर से एक और बार रामेश के हाथों हार गया। - *बाबी*

राजा का बुरा सपना

दुर्भक देश का राजा दुर्मुख गाढ़ी नींद में था। उसे एक विकट अट्टहास सुनायी पड़ा, ''ऐ राजा, हर दिन सूर्योदय देखने की तुम्हारी आदत है। आज शुक्रवार है। परसों इतवार के दिन सूर्योदय के समय तुम्हारी मौत होगी। अगर वह अवधि टल जाए तो तुम्हारी मौत होगी ही नहीं।'' यों एक गंभीर कंठ ध्वनि ने राजा को चेतावनी दी। राजा चौंककर उठ बैठा। उसका सारा शरीर पसीने से सराबोर हो गया। उसने रानी को जगाया और सपने के बारे में बताया। रानी ने राजा को, ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''सपने सपने होते हैं। वे सच नहीं होते। आराम से सो जाइये और सपने को भूल जाइये।''

परंतु, राजा का भय दूर नहीं हुआ। वह चुप नहीं रह सका। उसने तुरंत सेनाधिपति को तथा मंत्री विवेकवर्धन को बुलवाया। उनसे अपने सपने के बारे में बताया। उसने आज्ञा दी कि वे इस विपत्ति से बचने के लिए कोई उपाय ढूँढ़ निकालें।

मंत्री किसी निर्णय पर नहीं आ सका। उसने सोचा कि राजा के सपने में जो बातें सुनाई पड़ीं, अगर वे सच हों तो कुछ भी किया नहीं जा सकता। जो होना है, होकर रहेगा। किन्तु राजा की आज्ञा का उल्लंघन भी किया नहीं जा सकता। कुछ न कुछ अवश्य करना ही होगा। राज पुरोहित और राजवैद्य को बुलवाया। राजा की जन्मकुंडली को फिर से एक और बार ध्यान से देखने के बाद राजपुरोहित ने ग्रहस्थितियों की एक और बार गिनती की और घोषणा की कि राजा सुरक्षित रहेंगे और डरने की कोई बात नहीं है। राजवैद्य ने राजा की नब्ज देखी और विश्वासपूर्वक कहा कि वे बिल्कुल स्वस्थ हैं और उनके मरने का सवाल ही नहीं उठता। इतने में सेनाधिपति ने आकर कहा, ''महाराज, पूरा अंतःपुर ढूंढ़ निकाला। कोई भी दिखायी नहीं पड़ा। नगर की गलियों से गुज़रते

स्वर्णकुमारी अहुजा

हुए कुछ आदमियों को हमने गिरफ्तार किया, जिनपर हमें शंका हुई। बाद में हमें मालूम हुआ कि वे खतरनाक लोग नहीं हैं।''

फिर भी, राजा का मन शांत नहीं हुआ। वह बार-बार मंत्री को सावधान करता रहा कि इतवार के सूर्योदय होने तक कोई दुर्घटना न घटे, जिससे उसकी मौत हो जाने की संभावना है। राजा के भय को दूर करने के लिए मंत्री ने मशहूर भूतवैद्य को बुलवाया। भूतवैद्य ने चौक पूरने का काम किया, उनके बीच आटे से बनी मूर्तियाँ रखीं और विचित्र ध्वनियों को गुंजाते हुए कितनी ही पूजाएँ कीं। फिर कहने लगा, ''महाराज, कोई भी दुष्ट शक्ति आपको छूने का भी साहस नहीं करेगी। निर्भय रहिये।''

फिर भी राजा दिन भर अशांत रहा। क्षण प्रतिक्षण उसका भय बढ़ता गया।

शनिवार के दिन राजा ने कुछ भी खाया-पीया नहीं। वह इसी चिंता के मारे भयभीत था कि कल सूर्योदय के तुरंत बाद उसकी मृत्यु होकर रहेगी। उसने फिर एक और बार मंत्री को बुलवाया, ''घोषणा कर दीजिये कि जो व्यक्ति कल सूर्योदय को रोकेगा, उसे आधा राज्य दे दूँगा।''

यह सुनकर मंत्री स्तंभित रह गया। उसने शांत स्वर में राजा से कहा, ''भला सूर्योदय को कौन रोक सकता है?'' मन ही मन उसे लगा कि प्राण-भीति के कारण राजा की मति भ्रष्ट हो गयी। फिर भी राजा की आज्ञा के अनुसार उसने मुनादी पिटवा दी।

शाम को, ज्ञानशेखर नामक एक युवक राजा के पास आया और बोला, ''महाराज, मैंने आपकी घोषणा सुनी। मैं सूर्योदय को रोकूँगा और आपको मौत के मुँह से बचाऊँगा।''

राजा ने आश्चर्य भरे नेत्रों से उसे देखते हुए कहा, ''सूर्योदय को कैसे रोक सकते हो?''

''परंपरा से अपने देश में हम यह करते आ रहे हैं। इस रहस्य भरी विद्या में हम निष्णात हैं। परंतु, आपको एक काम करना होगा।'' युवक ने कहा।

राजा ने बड़ी ही बेचैनी से पूछा, ''कहो, वह काम क्या है?''

''आप कल प्रातःकाल ही जाग जाइये। राजभवन के अपने शयनागार के पूर्वी कमरे की खिड़की मात्र खोल रखिये। आकाश की ओर

अपनी दृष्टि केंद्रित कीजिये। सूर्योदय आपको दिखायी नहीं पड़ेगा।

"उसी प्रकार घोषणा करवाइये कि नगर की गलियों में जब तक घंटी का नाद सुनायी नहीं पड़ेगा तब तक कोई भी नागरिक अपने घर से बाहर न निकले। अब आप निश्चिंत और आश्वस्त रह सकते हैं।" यों अभय देकर युवक चला गया। राजा का मन अब थोड़ा हल्का हुआ।

दूसरे दिन सवेरे ही राजा दुर्मुख अपने शयनागार की पूरबी खिड़की के पास बैठ गया और सांस रोककर आकाश की ओर देखता रहा। पूरबी पर्वतों के घने जंगलों से काले-काले मेघों की तरह का गाढ़ा धुआँ आकाश पर छा गया। एक घंटे तक यह धुआँ, जैसे था, वैसे ही छाया रहा। इतने में सूर्योदय का समय भी बीत गया। जब राजा को पक्का विश्वास हो गया कि मृत्यु से बच गया हूँ, अब मेरे प्राण संकट में नहीं हैं तो वह शयनागार से बाहर आया। थोड़ी ही देर में धुआँ ग़ायब हो गया और सूरज भी स्पष्ट दीखने लगा। इसके दूसरे ही क्षण नगर की गलियों में घंटी प्रतिध्वनित हुई और लोग अपने-अपने घरों से बाहर आये। किन्तु, आधे राज्य की मांग पेश करनेवाला ज्ञानशेखर नहीं आया।

केवल मंत्री विवेकवर्धन को ही मालूम था कि ज्ञानशेखर नहीं आयेगा, क्योंकि राजा को बुरे सपने से बचाने के लिए, उसके भय को दूर करने के लिए उसी ने ज्ञानशेखर को राजा के पास भेजा था। और राजा को विश्वास दिलवाया था कि वह सूर्योदय को रोकने की क्षमता रखता है। फिर, हज़ारों विश्वस्त अनुचरों को, हज़ारों बैलगाड़ियों में सूखी घास भरकर पूरबी पर्वतों के जंगलों में भेजा और इस घास पर ठंडा पानी छिडकवाया और सूर्योदय के थोड़े समय पहले उसमें आग लगवायी। इससे धुआँ फैल गया और उस धुएँ में राजा सूरज को देख नहीं पाया। यों मंत्री ने राजा के भय को दूर किया और किसी की जानकारी के बिना राजा की मर्यादा की रक्षा की। अन्यथा लोग राजा की हँसी उड़ाते और उसे डरपोक ठहराते।

मंत्री विवेकवर्धन के इस विवेकपूर्ण कार्य को जितना भी सराहा जाये, कम है।

पट्ट हाथी

सैकड़ों साल पहले की बात है। काशी राज्य पर ब्रह्मदत्त शासन करते थे। उन दिनों काशी नगर से थोड़ी दूर बढ़इयों का एक गाँव था। उसमें पाँच सौ बढ़ई थे। वे लोग नावों में नदी पार कर जंगलों में चले जाते, पेड़ काट कर नावों में लाद कर लकड़ी ले आते थे।

जंगल में एक हथिनी रहा करती थी। एक दिन उसके पैर में एक चैला फंस गया जिस से उसका पैर सूझकर दर्द करने लगा। बड़ी कोशिश करके भी वह उस चैले को पैर से निकाल न पाई। इस बीच उसे पेड़ काटने की आवाज़ सुनाई दी। हथिनी लंगड़ाते उनके नज़दीक पहुँची।

हथिनी को देखते ही बढ़इयों ने भांप लिया कि वह किसी पीड़ा से परेशान है। इस बीच हथिनी आकर बढ़इयों के सामने लेट गई। बढ़इयों ने छेनी से हथिनी के पैर का चैला निकाला और उसके घाव पर मरहम पट्टी की।

थोड़े ही दिनों में हथिनी चलने-फिरने लायक़ हो गई। इस उपकार के बदले में हथिनी बढ़इयों की मदद करने लगी। वह गिरे हुए पेड़ों को उठाकर ला देती। काटी गई तख्तियों और पाटियों को नदी के पास नावों तक पहुँचा देती। इस वजह से बढ़इयों और हथिनी के बीच दोस्ती बढ़ती गई। पाँच सौ बढ़ई अपने खाने काथोड़ा हिस्सा हथिनी को खिलाने लगे।

कई दिन बीत गये। हथिनी का एक बच्चा हुआ। वह ऐरावत जाति का था और उसका रंग सफ़ेद था। हथिनी जब बूढ़ी हो गई और उसमें चलने-फिरने की ताक़त न रही, तब वह अपने बच्चे को बढ़इयों के हाथ सौंपकर जंगल में चली गई। इसके बाद सफ़ेद हाथी बढ़इयों की मदद करने लगा। उनके हाथ का खाना खा लेता और उनके बच्चों को अपनी पीठ पर बिठाकर जंगल में घुमा देता। नदी में उन्हें नहलाता और ख़ुशी के साथ अपने दिन गुजार देता था। बढ़ई लोग हाथी को अपने बच्चे के बराबर प्यार करते थे। हाथी

लेकिन वे कर भी क्या सकते थे। आखिर यह राजा की इच्छा थी और राजा अपने राज्य में कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र था। उन्होंने यह भी सोचा कि राजा के पास हाथी अधिक सुख और शान के साथ रह सकेगा। इसीलिए हाथी के जाने का दुख होते हुए भी वे राजी हो गये।

"तब तो आप हाथी को अपने साथ ले जाइये।" बढ़इयों ने उत्तर दिया।

मगर बड़ी कोशिश के बावजूद हाथी टस से मस न हुआ। इस पर राजा का एक कर्मचारी असली बात ताड़ गया और बोला, "महाराज, यह एक विवेकशील जानवर है। आप अगर इस हाथी को अपने साथ ले जायेंगे तो इन बढ़इयों का भारी नुक़सान होगा। इसका मुआवजा देने पर ही हाथी यहाँ से निकल सकता है।"

राजा ने हाथी के चारों पैर और सूंड के पास एक एक लाख सोने के सिक्के रखकर बढ़इयों को बाँटने का आदेश दिया। तिस पर भी हाथी वहाँ से नहीं हिला। इसके बाद राजा ने बढ़इयों की औरतों और बच्चों को कपड़े दिये, तब जाकर हाथी राजा के पीछे चल पड़ा।

इसके बाद राजा गाजे-बाजे के साथ हाथी को काशी नगर में ले गये। उसे राजसी अलंकारों से सजाया संवारा गया। फिर सारी गलियों में उसका जुलूस निकाला गया।

अंत में उसके वास्ते एक बढ़िया गज शाला बनाकर उसमें रखा गया। उसकी सेवा के लिए सैकड़ों नौकर-चाकर रखे गये। उसके भोजन का विशेष प्रबन्ध किया गया। वह हाथी राजा का

उनके परिवार के सदस्य की तरह उनके लिए उपयोगी बनने की कोशिश करता था।

राजा ब्रह्मदत्त को जब यह ख़बर मिली कि जंगल में एक उत्तम नस्ल का सफ़ेद हाथी है, तब वे उसे पकड़ ले जाने के लिए सदल-बल जंगल में चले आये।

बढ़इयों ने सोचा कि राजा मकान बनाने की लकड़ी के वास्ते जंगल में आये हुए हैं। उन लोगों ने राजा को समझाया, "महाराजा, आप मेहनत उठाकर इस जंगल में क्यों आये? हमें ख़बर कर देते तो ख़ुद हम लकड़ी आपके महल में पहुँचा देते?"

"मैं लकड़ी ले जाने के वास्ते नहीं आया हूँ; सफ़ेद हाथी को पकड़ ले जाने के वास्ते आया हूँ।" राजा ने अपने दिल की बात बताई।

बढ़इयों को यह सुनकर बहुत दुख हुआ।

पट्ट हाथी बना। उस पर सिवाय राजा के कोई सवार नहीं हो सकता था।

नगर में उस हाथी के आने के बाद क ाशी राज्य की सीमा और यश चारों तरफ़ फैलने लगा। उसके प्रभाव से बड़े-बड़े राजा भी काशी राजा से बुरी तरह हार जाते थे। राज्य में सुख-शान्ति और खुशहाली बढ़ने लगी। प्रजा में एक दूसरे के लिए प्रेम और सौहार्द बढ़ने लगा।

कुछ दिन बाद काशी की रानी गर्भवती हुई। उसके गर्भ में बोधिसत्व ने प्रवेश किया। रानी के प्रसव में एक हफ़्ता ही रह गया था; इस बीच काशी राजा का स्वर्गवास हो गया। यह मौक़ा देख कोसल देश के राजा ने काशी राज्य पर अचानक एक दिन हमला कर दिया। मंत्रियों ने आपस में सलाह-मशविरा किया और आख़िर कोसल राजा के पास यह संदेश भेजा, ''आपने कायर की तरह धोखे से हमारे राज्य पर आक्रमण कर दिया है, जब कि सारा राज्य अपनेराजा की मृत्यु पर शोक में डूबा हुआ है। यह नीचता है। एक अच्छे पड़ोसी राजा होने के नाते आप को हमारे साथ सम्वेदना और सहायता का हाथ बढ़ाना चाहिये था। ख़ैर, जो भी हो, हमारी रानी का एक हफ़्ते के अन्दर प्रसव होनेवाला है, अगर महारानी ने एक बच्ची को जन्म दिया तो आप काशी राज्य पर बिना युद्ध और रक्तपात के कब्जा कर लीजिये । यदि रानी ने एक लड़के को जन्म दिया तो हम लोग आप के साथ युद्ध करेंगे और देश के लिए मर मिटेंगे और जीते जी शत्रुओं को सीमा के अन्दर आने नहीं देंगे।''

कोसल राजा ने उन्हें एक हफ़्ते की मोहलत दी। एक हफ़्ते के पूरा होते ही महारानी ने बोधिसत्व को जन्म दिया। काशी राजा की सेनाएँ कोसल

सेना के साथ जूझ गई। मगर उस युद्ध में कोसल का हाथ ऊँचा मालूम होने लगा। उस हालत में मंत्रियों ने महारानी के पास जाकर निवेदन किया, ''महारानी जी, हमारे पट्ट हाथी का लड़ाई के मैदान में प्रवेश करने पर ही हमारी विजय हो सकती है, लेकिन महाराजा के स्वर्गवास के दिन से लेकर पट्ट हाथी खाना-पीना व नींद को भी तज कर दुख में डूबा हुआ है। हमारी समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसी हालत में क्या किया जाये।''

मंत्रियों के मुँह से ये बातें सुनते ही महारानी प्रसूती के कमरे में उठ बैठी, अप ने शिशु को राजोचित पोशाक पहनाकर पट्ट हाथी के पास ले गई।

शिशु को उसके पैरों के सामने रखकर प्रणाम करके बोली, ''गजराज, आप अपने मालिक के स्वर्गवास पर चिंता न कीजिए। देखिये, अब यही राजकुमार आपका मालिक है। लड़ाई के मैदान में इसके दुश्मनों का हाथ ऊँचा है। आप जाकर उन्हें हरा दीजिए। वरना इस राजकुमार को अपने पैरों के नीचे कुचलकर मार डालिये।'' रानी के मुँह से ये बातें निकलने की देर थी कि हाथी का दुख जाता रहा। उसने प्यार से राजकुमार को अपनी सूंड से ऊपर उठाया और अपने मस्तक पर बिठा लिया। फिर राजकुमार को रानी के हाथ में सौंप कर लड़ाई के मैदान की ओर चल पड़ा।

हाथी का रौद्र रूप और भयंकर गर्जन करते और अपनी ओर बढ़ते देख कोसल राज्य के सैनिकों का कलेजा कांप उठा। वे तितर-बितर होकर भागने लगे। किसी सैनिक को उसके सामने आने का साहस नहीं हुआ। जो भी उसके सामने आ जाता, उसे कुचलता-रौंदता, उछालता हुआ हाथी तूफान की तरह आगे बढ़ता गया और सीधे कोसल राजा के पास पहुँचा। उनको अपनी सूंड में लपेट कर ले आया और काशी के राजकुमार के पैरों के पास डाल दिया। कोसल राजा ने राजकुमार के चरण छूकर माफ़ी माँग ली। काशी राज्य के मंत्रियों ने उनको क्षमा कर वापस भेज दिया।

बोधिसत्व के सात साल की उम्र होने तक हाथी ने काशी राज्य की रक्षा की। इसके बाद बोधिसत्व गद्दी पर बैठे और उस हाथी को अपना पट्ट हाथी बनाकर बड़ी दक्षता के साथ शासन करने लगे।

रामायण

गली में नागरिक करुणा भरी दृष्टि से देख रहे थे। कुछ रथ के पीछे भाग रहे थे। कुछ रथ को पकड़े लटक रहे थे।

कुछ ने रथ के सामने आकर सुमन्त्र से कहा, ''न मालूम हम फिर कब इन्हें देखेंगे। रथ ज़रा धीमे-धीमे जाने दो।''

दशरथ ने यकायक कहा, ''मुझे राम को देखना है।'' कहकर अपने घर से गली में आकर खड़े हो गये। उनके साथ उनकी पत्नियाँ भी भागने लगीं।

''सुमन्त्र, रथ ज़रा रोको।'' दशरथ चिल्लाये। वे कुछ दूर तक भाग कर गये।

राम, जो पीछे मुड़कर देख रहे थे, यह न सह सके। उन्होंने सुमन्त्र से कहा, ''रथ ज़रा तेज़ी से चलाओ। यह दु:ख मुझे कितनी देर देखना होगा? कैसे देखूँ? अगर महाराजा पूछें तो कह देना कि लोगों के शोर में उनकी आवाज़ सुनाई नहीं पड़ी थी।'' राम के पीछे आनेवालों से विदा लेने पर, सुमन्त्र घोड़ों को तेज़ी से हाँकने लगा। घोड़े भी जाते झिझक रहे थे।

दशरथ से मन्त्रियों ने कहा, ''यदि आप चाहते हैं कि वे जल्दी वापस आयें, तो आपको अधिक दूर उनको छोड़ने नहीं जाना चाहिए।''

दशरथ का सारा शरीर पसीना-पसीना हो रहा था। वे मन्त्रियों के साथ वहीं खड़े हो गये और रथ के ओझल होने तक देखते रहे।

राम के वनवास चले जाने पर दशरथ का अन्त:पुर रोदन-क्रन्दन से हाहाकार करने लगा। अयोध्या उजड़ी उजड़ी-सी लगने लगी। जो काम जैसा था, वैसा ही पड़ा रहा। लोगों ने इस तरह
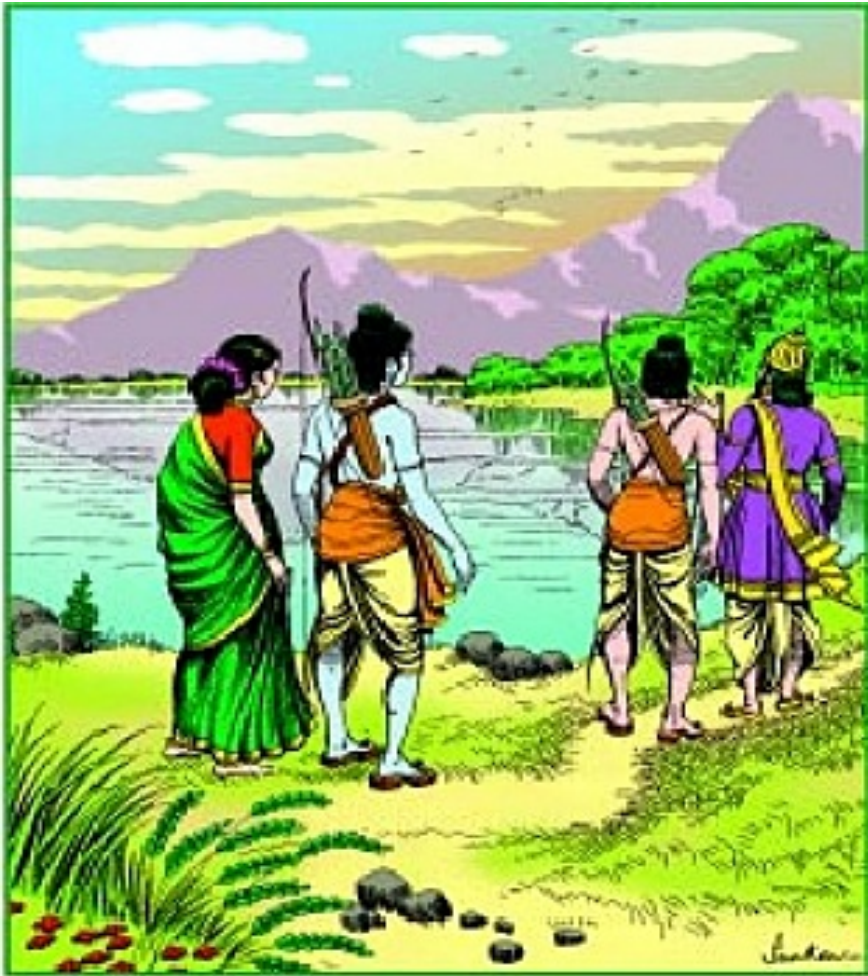
अनुभव किया जैसे कोई उपद्रव हो गया हो। और उसमें उनका सबकुछ लुट गया हो। क्या बूढ़े और क्या जवान, क्या स्त्री और क्या बच्चे, सभी चिल्ला रहे थे, ''राम न जाओ, राम न जाओ।'' कुछ चिल्लाते-चिल्लाते थक कर जहाँ थे वहाँ गिर पड़े, मानो उनके प्राण-पखेरु उड़ गये।

दशरथ राम के पीछे कुछ दूर गये और फिर गिर गये। कौशल्या और कैकेयी ने बाँह पकड़कर उन्हें उठाया। दशरथ ने कैकेयी से कहा, ''मुझे न छुओ। मैं तुम्हारा पति नहीं हूँ, मैंने तुम्हें छोड़ दिया है। यदि तुम्हारे पुत्र ने मेरा श्राद्ध पिण्ड किया, तो वे मुझे न मिलेंगे।'' वे राम के लिए रोते-रोते कौशल्या के घर चले आये।

सुमित्रा ने आकर कौशल्या और दशरथ को आश्वासन दिया।

सूर्यास्त होते-होते राम और लक्ष्मण का रथ तपसा नदी के तट पर पहुँचा। नगरवासी वहाँ तक रथ के पीछे आते ही रहे। वे राम के वनवास पर जाने के लिए रोते रहे। राम ने उन्हें बहुत समझाया, पर उन्होंने न सुना।

सुमन्त्र ने घोड़े खोल दिये। उन्हें धोकर पानी पिलाया। नदी के किनारे घूमने दिया। फिर उन्हें बाँधकर दाना खिलाया। लक्ष्मण और सुमन्त्र ने राम और सीता के लिए पत्तों का बिस्तर लगाया। वे उस पर सो गये। सुमन्त्र और लक्ष्मण ने बातें करते-करते सारी रात काट दी।

राम के साथ जो लोग आये थे वे भी नदी के किनारे सो गये। सवेरा हो रहा था कि राम उठे। जो लोग घरबार छोड़कर, पेड़ों के नीचे सो रहे थे उनको देखकर राम ने लक्ष्मण से कहा, ''इन सब के उठने से पहले ही हमारा रथ पर सवार होकर चले जाना अच्छा है। नहीं तो ये हमें नहीं छोड़ेंगे। हमारे साथ ही चले आयेंगे।''

सुमन्त्र रथ तैयार करके ले आया। राम ने सुमन्त्र से कहा, ''तुम रथ को चारों ओर घुमाकर लाओ। तब लोग यह नहीं जान सकेंगे कि हम किस तरफ़ गये हैं।'' सुमन्त्र उनके कहे अनुसार रथ घुमाकर लाया। सीता, राम, लक्ष्मण उसमें सवार होकर उत्तर दिशा की ओर चल दिये।

लोगों ने सवेरे उठकर देखा कि वहाँ रथ नहीं है। सीता, राम, लक्ष्मण भी नहीं हैं। वे अपनी नींद और शरीर को कोसते, जिनके कारण वे समय पर न उठ पाये थे, अध्योया की ओर वापिस चल दिये।

जब प्रातःकाल हुआ तो राम का रथ बहुत दूर चला गया था। वे दक्षिण कोशल देश को पार करके, कोशल के दक्षिण में बहनेवाली गंगा नदी के पास पहुँचे। शृंगिवेरपुर के पास सुमन्त्र ने एक बड़े पेड़ के पास रथ रोका। घोड़े खोल दिये। उनको दाना बाना दिया। सीता, राम, लक्ष्मण, उसी पेड़ के नीचे आराम से बैठ गये।

इतने में जंगलियों के राजा गुह, जो राम का मित्र था, यह जानकर कि राम आये हुए हैं, अपने मन्त्रियों और मुखियों के साथ उन्हें मिलने आया।

उसे दूरी पर देख, राम, लक्ष्मण को साथ लेकर उससे मिलने गये। उसको बड़े प्रेम के साथ गले लगा लिया।

दोनों मित्रों की आँखों से अश्रु बहने लगे। वे बहुत देर तक एक दूसरे के गले से चिपके रहे।

गुह ने व्यथित स्वर में कहा, ''इसे ही अयोध्या समझो। यह हमारा भाग्य है कि तुम हमारे अतिथि होकर आये।''

फिर गुह ने राम, लक्ष्मण और सीता के लिए अच्छा भोजन बनवाया। ''राम, तुम्हें किसी चीज़ की कमी न होगी, तुम ही इस राज्य का परिपालन करो।'' राम ने गुह को छाती से लगाकर कहा, ''गुह, तुम मेरे लिए पैदल चलकर आये हो, यही मेरे लिए काफ़ी है, और क्या चाहिए। तुम अपना राज्य रखो। मुझे वल्कल पहनकर बनवास करना ही होगा।''

रात, राम और सीता वहीं पेड़ के नीचे सो गये। लक्ष्मण उनकी रखवाली कर रहा था। उससे गुह ने कहा, ''बेटा, तुम भी सो जाओ। सवेरे तक मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। हम तो जंगल में रहते हैं, हमारी तो यह आदत ही है।'' परन्तु लक्ष्मण न माना। वह रात भर गुह से जो कुछ गुज़रा था, उसके बारे में बातें करता रहा। सब सुनकर गुह बड़ा चिन्तित हुआ।
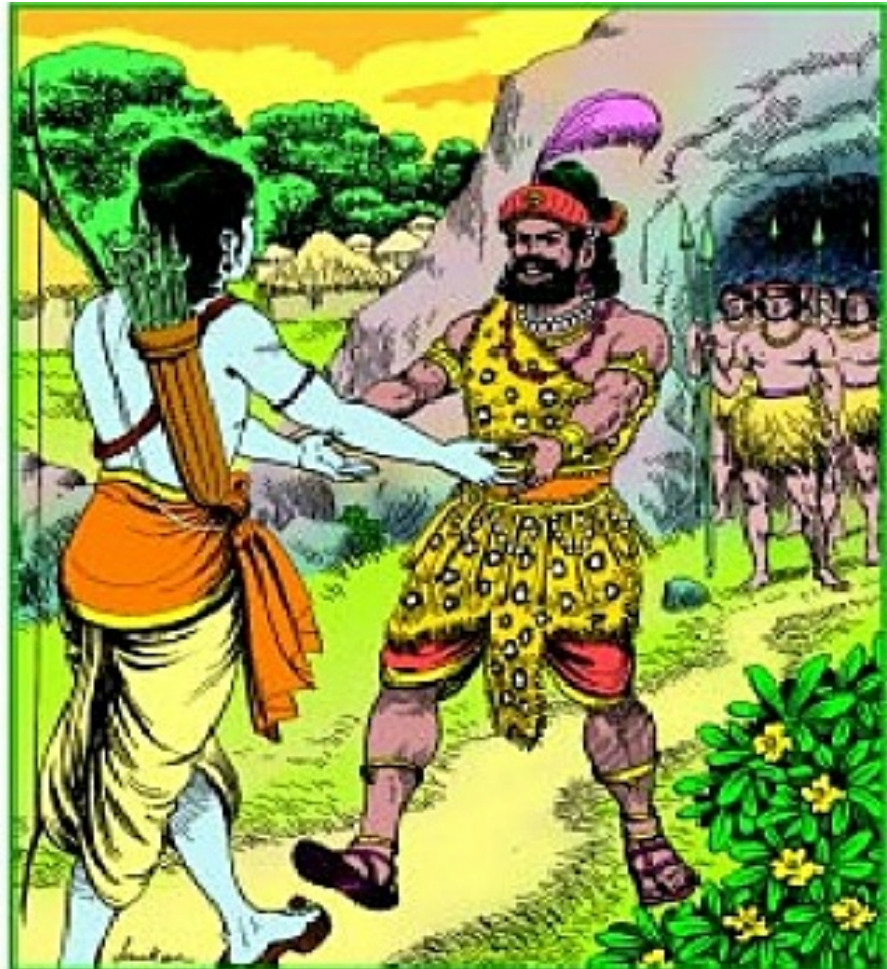
रात गुज़र गई। अगले दिन सवेरे कोयल की कूक और मोरों की आवाज़ सुन कर वे उठे।

राम ने लक्ष्मण से कहा, ''सूर्योदय हो रहा है। चलो, हम गंगा पार करें।'' लक्ष्मण जंगलियों के राजा गुह और सारथी सुमन्त्र को बुलाकर लाया। राम ने गुह से कहा कि वे गंगा पार करना चाहते हैं। गुह ने अपने आदमियों को खबर दी कि वे गंगा पार करने के लिए अच्छी नौकाएँ तैयार रखें।

राम ने सुमन्त्र ने कहा, ''अब तुम अयोध्या

वापस चले जाओ। हमारे माता-पिता से हमारा शुभ क्षेम कहना और कहना कि चौदह साल होते ही हम वापस आ जायेंगे। फिर भरत को मामा के यहाँ से बुलवाकर राज्याभिषेक करवा देना।''

थोड़ी देर रुककर फिर उन्होंने कहा, 'कैकेयी माता को कहना कि मैंने उनकी आज्ञा का पालन हर्ष के साथ किया है। भरत मेरा प्रिय भ्राता है। उसके राज्याभिषेक से बढ़कर मेरे लिए प्रसन्नता की और कोई बात नहीं हो सकती। पिताजी को वे सान्त्वना दें कि हमलोग यहाँ सकुशल और सानन्द हैं। हमारे लिए चिन्ता न करें। कौशल्या माता और सुमित्रा माता से कहना कि हम तीनों यहाँ जंगल की प्राकृतिक छटा में बहुत प्रसन्न हैं।''

सुमन्त्र ने कहा, ''मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं रणभूमि से जैसे कोई सारथी योद्धा के गिर जाने पर, खाली रथ ले जा रहा हूँ। मैं इस रथ को, जिस पर आप तीनों को सवार करके लाया था, खाली ले गया तो लोगों का दिल फूट न पड़ेगा? खाली रथ ले जाकर आपकी माताओं को कैसे मैं अपना मुँह दिखाऊँ? मैं भी चौदर वर्ष आपके साथ रहूँगा, शिकार करके आपको देता रहूँगा। कृपया मुझे भी अपने साथ रहने की आज्ञा दीजिये। आप की सेवा से मेरा जीवन धन्य हो जायेगा। जिस अयोध्या में, जो आप के बिना सूना-सूना है, जाकर क्या करूँगा? आप मुझे चरणों में रहने दीजिये।''

''नहीं भाई, यदि तुम यहीं रहे तो कैकेयी और पिताजी को कैसे मालूम होगा कि हमने उनकी
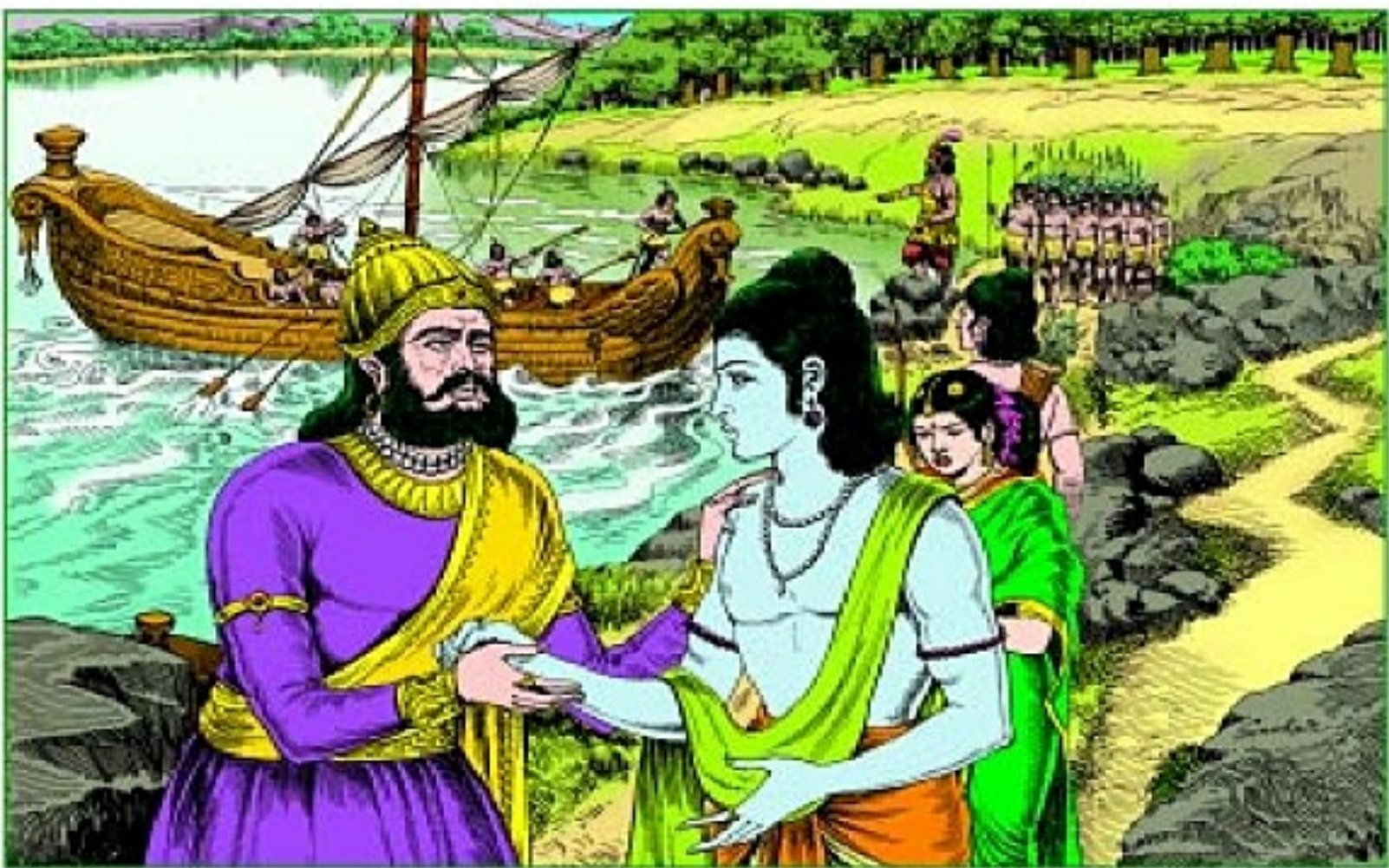
आज्ञा पालन की है। इसलिए तुम्हें वापस जाना ही होगा।'' राम ने कहा।

राम की इच्छा पर गुह वट वृक्ष का दूध ले आया। उससे राम लक्ष्मण ने अपनी जटायें मुनियों की तरह बाँध लीं।

लक्ष्मण ने पहले सीता को नौका में बिठाया, फिर स्वयं बैठ गया। राम गुह से विदा लेकर अन्त में बैठे। गुह के बन्धुओं ने चप्पू चलाकर नाव को खेना शुरू किया।

जब नौका नदी के बीच प्रवाह में थी तो सीता ने गंगा को नमस्कार करके कहा, ''गंगा देवी जी, मैं चौदह वर्ष बाद सक्षेम व पस आऊँगी तो ब्राह्मणों को लाख गौवें, वस्त्र आदि दान दूँगी । अन्न दूँगी। तुम्हारे तीर पर जितने भी मन्दिर हैं, उनमें माथा टिकाऊँगी। हमें आशीर्वाद दो कि हम सुरक्षित वापस आ जायें।''

जल्दी ही नाव गंगा के पार चली गई। सीता, राम, लक्ष्मण ने वत्स देश में कदम रखा। वे पैदल निकल पड़े। पहले लक्ष्मण था, उसके पीछे सीता और सीता के पीछे राम।

और इस पार, सुमन्त्र जब तक वे आँखों से ओझल न हो गये, तब तक उनको लगातार एक टक देखता रहा। फिर उसकी आँखों से आँसू झर-कर बहने लगे।

राम लक्ष्मण ने उस दिन शिकार करके अपनी भूख मिटाई। वे रात को एक पेड़ के नीचे बैठ गये। राम कुछ इधर-उधर की बातें करने लगे।

वनवास की यही पहली रात थी। यहाँ से
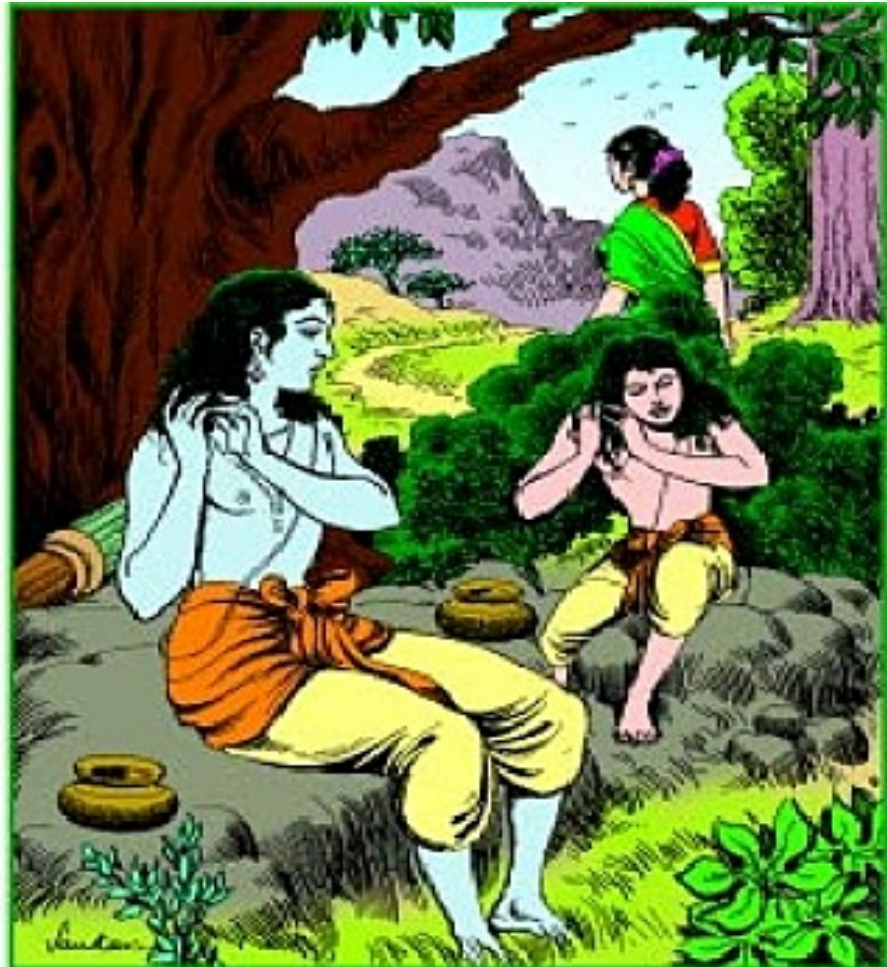
सुमन्त्र भी साथ न होगा। बिना सोये राम और लक्ष्मण को, सीता की रक्षा करनी होगी। अब दशरथ न जाने कितने दुखी होंगे। राम बैठे-बैठे सोचने लगे। उनका मन दुखी था। पहली बार उनके चेहरे पर विषाद की छाया दिखाई पड़ी। पिता दशरथ का हृदय विदारक विलाप उनकी आँखों के सामने नाचने लगा। रोती बिलखती माता कौशल्या की याद आते ही वे विचलित हो उठे। उन्हें अपने वनवास का दुख नहीं था, लेकिन उनके वनवास से दुखी पूरी अयोध्या की हालत से वे अशान्त हो गये थे। बार-बार रोते-बिलखते माता-पिता के चेहरे सामने आ रहे थे। मगर कैकेयी बड़ी खुश होगी। दुष्टा, भरत को राजा बनाने के लिए कहीं राजा को मार तो न देगी? सब कुछ ठीक-ठाक शान्तिपूर्वक चल रहा था,

यह अचानक बवण्डर कहाँ से आ गया। धर्म, अर्थ, मोक्ष, काम में शायद काम ही सबसे अधिक बलवान पुरुषार्थ है। नहीं तो क्या कोई पिता अपने लड़के को यों वन में भेजेगा? कैकेयी ही दशरथ के दुःख और मेरे वनवास का कारण है। चाहूँ तो अयोध्या ही क्या सारा संसार जीत सकता हूँ? लेकिन पिता की बात पर धर्म के लिए पट्टाभिषेक ही ठुकरा दिया।

राम यही सब सोचते आँसू बहाते बहुत देर तक बैठे रहे। उनको आँसू बहाते देख लक्ष्मण ने उनको आश्वासन दिया। इन बातों से राम का ढाढ़स बँधा और, वनवास की इच्छा दृढ़ हो गयी। पास ही में पेड़ के नीचे पत्ते बिछाकर, लक्ष्मण ने बिस्तर तैयार कर दिया। सीता, राम वहीं सो गये।

प्रातः काल होते ही तीनों गंगा, यमुना के संगम प्रयाग की ओर चल दिये। वहाँ भरद्वाज मुनि का आश्रम था। जब वे उनके आश्रम में पहुँचे तो सूर्यास्त हो गया था। राम ने भरद्वाज को संक्षेप में अपनी कहानी सुनाई।

''हाँ, सुना है कि निष्कारण तुम्हारे पिता ने तुम्हें वन में भेजा है। तुम यहाँ आये हो, इसलिए मैं तुम्हें देख सका। इसी आश्रम में पर्णशाला बनाकर, चौदह वर्ष काट दो। इस पवित्र प्रदेश में सुखपूर्वक रह सकोगे।'' भरद्वाज ने कहा।

यह सुन राम ने कहा, ''मुनीन्द्र! यदि हमारे लोगों को मालूम हो गया कि हम किसी आश्रम में हैं, तो वे हमें देखने आते रहेंगे। इसलिए दूर यदि हमारे रहने लायक जगह हो तो बताइये। सीता पिता के घर बड़े आराम से पली है। यदि आप कोई ऐसा रम्य स्थल बतायेंगे, जो देखने में सुन्दर हो तो हम वहीं जाकर रहेंगे।''

''यदि यहाँ न रहना चाहो तो यहाँ से दस कोस की दूरी पर चित्रकूट नाम का पर्वत है। वह बहुत सुन्दर प्रदेश है। वहाँ की प्राकृतिक छटा निराली है। फल-फूलों की कमी नहीं है। सर्वत्र मीठे जल के झरने बहते रहते हैं। उस पहाड़ पर बन्दर, लंगूर और भालू रहते हैं। कई हजार वर्षों से वहाँ ऋषि तपस्या करते आ रहे हैं। इसलिए वहाँ का वातावरण बहुत पवित्र है। वहाँ आश्रम बना सकते हो।'' भरद्वाज ने कहा।

बेतुकी सलाहें

रामदीन अपने बाप-दादों के ज़माने की एक झोंपड़ी का मालिक था। उससे सटकर एक विशाल पिछवाड़ा था। उसने अपने पिछवाड़े में केले के कल्ले रोप दिये। केले का बगीचा ख़ूब बढ़ा, हरा-भरा तथा देखने में मनमोहक था।

एक दिन सवेरे रामदीन केले के बगीचे में पानी सींच रहा था। तभी गाड़ी में से जमीन्दार की पत्नी उतर पड़ी। रामदीन अपने हाथों को साफ़ कर जमीन्दार की पत्नी के सामने आ खड़ा हुआ।

जमीन्दार की पत्नी ने रामदीन का नाम पूछकर कहा, ''रामदीन, तुम अपने पिछवाड़े के साथ अपनी झोंपड़ी को बेच सकते हो?''

रामदीन विस्मय में आ गया। वह कोई उत्तर न दे पाया। समझ न पाया कि जमीन्दार की पत्नी उसकी पुरानी झोंपड़ी लेकर करेंगी ही क्या?

''पैसे की तुम चिंता न करो। मैं तुम्हें पाँच सौ रुपये दूँगी।''

रामदीन अपने कानों पर यक़ीन नहीं कर पाया, क्योंकि उस झोंपड़ी के लिए कोई दो सौ रुपयों से ज़्यादा न देगा।

रामदीन को मौन देख जमीन्दार की पत्नी बोली, ''अच्छी बात है! साढ़े सात सौ रुपये देती हूँ। अब मोल-भाव मत करो।''

रामदीन को लगा कि वह बेहोश होता जा रहा है। साढ़े सात सौ रुपये! वह इस विचार में खो गया कि इतनी पूँजी लगाकर कोई भी व्यापार कर सकता है।

इस बार भी रामदीन को मौन देख वह ख़ीझकर बोली, ''मैं अंतिम बात कह रही हूँ- एक हज़ार रुपये दूँगी! झोंपड़ी बेचते हो या नहीं?''

रामदीन ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया और कहा, ''शाम के अंदर हम झोंपड़ी ख़ाली कर देंगे। शाम को आप इस पर कब्ज़ा कर सकती हैं।''

''शामको मैं अपने नौकर के द्वारा रुपये भेज

दूँगी!'' यों कहकर जमीन्दार की पत्नी बड़ी ख़ुशी के साथ चली गई।

उसके जाते ही रामदीन अपनी औरत से बोला, ''अरी! सुनो! हमारी क़िस्मत खुल गई।''

इधर जमीन्दार की गाड़ी रामदीन की झोंपड़ी के आगे आकर जब रुकी, तभी से अड़ोस-पड़ोस के लोग उनकी बातचीत बड़ी उत्सुकता के साथ सुन रहे थे। वे अब आकर आश्चर्य से बोले, ''क्या तुम सचमुच इस झोंपड़ी को बेच दोगे?''

''अरे साहब! एक हज़ार रुपये मिल रहे हैं तो क्यों न बेचूँगा?'' रामदीन ने उल्टा सवाल किया।

''अरे, तुम्हारी अक़्ल चरने गई है! तुमने यह भी सोचा है कि तुम्हारी इस टूटी-फूटी झोंपड़ी के लिए एक हज़ार रुपये क्यों दिये जा रहे हैं? इस झोंपड़ी से बहुत बड़ा लाभ न हो तो जमीन्दारिन इतने रुपये क्यों लुटा देंगी? उन्हें यह मालूम होगा कि तुम्हारी झोंपड़ी के अन्दर कोई खज़ाना है। तुम तो भोले और बुद्धू ठहरे! इसीलिए झट बेचने को तैयार हो गये हो? हमारी बात सुनो, तुम किसी भी दाम पर झोंपड़ी को मत बेचो, तुम्हीं ख़ुद खोदकर उस खज़ाने को ले लो।'' यों सबने रामदीन को बेतुकी सलाहें दीं और वहाँ से चले गये।

ये बेतुकी सलाहें रामदीन को उचित प्रतीत हुईं। उसकी औरत ने भी पड़ोसियों की बातों में आकर कहा, ''इन लोगों का कहना सच मालूम होता है। हाल ही में जमीन्दारिन अपनी कन्या का विवाह भी करने जा रही है, ऐसी हालत में एक हज़ार रुपये ख़र्च करके यह झोंपड़ी क्यों ख़रीद लेगी? इस झोंपड़ी में अपनी लड़की को थोड़े ही बिठाने वाली है?''

शामको जब जमीन्दार का नौकर एक हज़ार रुपये लेकर पहुँचा, तब पति-पत्नी दोनों ने झोंपड़ी बेचने से इनकार कर दिया।

उस दिन रात को लालटेन की रोशनी में रामदीन ने केले के पौधों को उखाड़कर फेंक दिया, सारे पिछवाड़े को गहराई तक खोदा। झोंपड़ी के भीतर उसे कोई चीज़ दिखाई न दी। इस पर उसने झोंपड़ी की छत को हटाकर ढूँढ़ा, कहीं कोई चीज़ हाथ न लगी।

इतने में सवेरा हो गया। रामदीन रुआँस स्वर में बोला, ''हमने बहुत बढ़िया सौदा हाथ से निकल जाने दिया।''

''अब भी कुछ बिगड़ा नहीं, तुम तुरंत जाकर

जमीन्दारिन से कह दो कि हम झोंपड़ी बेचने के लिए तैयार हैं। पाँच सौ भी दे, मान जाओ।'' रामदीन की पत्नी ने सुझाया।

रामदीन जमीन्दार के घर चला गया, जमीन्दार की औरत से बोला, ''मैंने मूर्खतावश लोगों की बेतुकी सलाहें मानकर झोंपड़ी बेचने से इनकार कर दिया था। अब मैं बेचना चाहता हूँ। आप जो उचित समझें, सो दे दीजिए!''

जमीन्दारिन ने मुस्कुराकर जवाब दिया, ''अब तुम्हारी झोंपड़ी मेरे लिए किस काम की? मैं अपना दाँव तो हार चुकी हूँ!'' इन शब्दों के साथ उसने जमीन्दार तथा उसके बीच जो दाँव लगाया गया था, उसका वृत्तांत सुनाया।

असल में बात यह थी कि जमीन्दार की गाड़ी उसके दादा-परदादाओं के ज़माने की थी। जब से वह ससुराल आई है, तब से वह जमीन्दार द्वारा नई गाड़ी ख़रीदवाने की कोशिश कर रही है। मगर जमीन्दार को अपनी पुरानी गाड़ी ही प्यारी है। उसके दादा-परदादा उसी में घूमते थे।

''पुरखों से चली आनेवाली चीज़ को कोई त्याग नहीं देता। आख़िर हमारे गाँव के छोर पर स्थित केले के पौधोंवाला भी अपने दादा-परदादाओं के ज़माने की झोंपड़ी को छोड़ना नहीं चाहेगा। तुम चाहे, उसके क़द के बराबर धन का ढेर लगा दो, तब भी वह उस झोंपड़ी को नहीं बेचेगा।'' जमीन्दार ने कहा था।

इस पर दोनों ने एक-एक हज़ार रुपयों का दाँव लगाया था और जमीन्दारिन हार चुकी थी।

''मैंने इस आशा से तुम्हें एक हज़ार रुपये देने को मान लिया था कि मैं दाँव में जीत जाऊँगी और जमीन्दार के द्वारा नई गाड़ी ख़रीदवा दूँगी। तुमने लोगों की बेतुकी सलाहें सुनकर मेरी आशा पर पानी फेर दिया। जानते हो? तुम्हें जिन लोगों ने झोंपड़ी न बेचने की सलाह दी, उन्हीं लोगों ने मेरे पास आकर अपनी झोंपड़ियाँ पाँच-पाँच सौ रुपयों में बेचने की इच्छा प्रकट की। दूसरों की बातों में आकर नुक़सान पा चुके हो। अब भी सही, अपनी अक़्ल ठिकाने पर रखो।''

रामदीन लज्जित हो अपना सिर झुकाये उल्टे पाँव लौट आया।

शूर-वीर भयंकर

भद्रगिरि और रत्नगिरि पड़ोसी राज्य थे। पीढ़ियों से उन दोनों देशों के बीच शत्रुता थी। इस बजह से कभी-कभी रक्तपात भी होता रहता था। दोनों देशों के राजा साहसी और युद्ध व्यूह में कुशल भी थे। इससे सेना नष्ट होती थी, पर कोई भी विजयी नहीं हो पाता था।

इन परिस्थितियों में भद्रगिरि के राजा की अकाल मृत्यु हो गयी। उसका बेटा रणधीर शासक बना। उसने शत्रु को हराने का निश्चय कर उस राज्य पर आक्रमण की घोषणा कर दी।

दो ही दिनों के अंदर दोनों राज्यों की सेनाएँ युद्ध के लिए सरहदों पर तैनात हो गयीं ।

युद्ध किसी भी क्षण शुरू होने ही वाला था, तब भद्रगिरि का एक छोटा-सा दलाधिपति शूर-वीर भयंकर, सेना को छोड़कर भागने लगा। एक और दलपति ने यह देखा और उसे पकड़ लिया। वह उसे राजा रणधीर के पास ले गया और उसे पकड़ने का कारण बताया।

रणधीर ने, उसे क्रोध-भरी आँखों से देखते हुए पूछा, ''अरे, तुम तो हट्टे-कट्टे हो, तुम्हारा शरीर दृढ़ है, और देखने में सचमुच ही बड़े ही शूर-बीर भयंकर लग रहे हो। युद्ध शुरू भी नहीं हुआ, मैदान छोड़कर एक कायर की तरह भाग निकले। तुमने ऐसा क्यों किया?''

बीर-शूर भयंकर ने बड़े ही विनय के साथ कहा, ''महाराज, कायरता की बजह से मैं भाग नहीं निकला। रत्नगिरि के सैनिकों से मुझे बेहद चिढ़ है। उनके चेहरे देखते ही मुझे घृणा होने लगती है। इसीलिए मैं भाग निकला।''

- लक्ष्मी नारायण, वडोदरा

चित्र: गाँधी अय्या
9
अपराजेय गरुड़
बज्रपुरी के प्रधानमंत्री पुष्पराज अपने राजा के अनुरोध पर नरेन्द्रदेव और बेटे रवीन्द्रदेव से पर्वत की गुफाओं में मुलाकात करता है। आप्तपुरुष यह समाचार लाता है कि नागबन्धु की आत्मा ने एक जंगली लड़की में आदित्य और अरुणा के विवाह को भंग करने की शक्ति भर दी है। पुष्पराज उस लड़की को साथ ले जाने के लिए राजी हो जाता है।
जंगली लड़की अरुणा के कक्ष के बारे में पूछती है।
मुझे राजकुमार ने भेजा है।
सीधे जाओ, तुम्हें एक सुसज्जित कक्ष मिलेगा।
जंगली लड़की देखती है कि अरुणा नींद में है। दूसरी चारपाई पर दो परिचारिकाएँ सो रही हैं।
विवाह का दिन। आदित्य रक्षक को बुलाता है।
मैं ध्यान करने जा रहा हूँ। ध्यान रखना कि कोई विघ्न न डाले।
आदित्य की अन्तर्दृष्टि में एक सर्प का दृश्य आता है। प्रतिमा के पास पंख...
...यह गरुड़ का रूप धारण कर लेता है। सर्प अदृश्य हो जाता है।
क्या यह पूर्व चेतावनी है?

द्वार को कोई घबराहट के साथ खटखटाता है।
कौन हो सकता है?
आदित्य द्वार को खोलता है।
राम सिंह! क्या बात है? राजा ठीक तो हैं!
वे ठीक हैं, महोदय। लेकिन अरुणा...
...उसके कमरे में धुआँ भर गया है।
आदित्य पंख को उठाकर अपनी पगड़ी में खोंस लेता है।
राम सिंह, चलो, अरुणा के कक्ष में चलते हैं।
अरुणा के कक्ष का धुआं अब भंवर बनाता हुआ सर्प का आकार ग्रहण कर रहा है। एक औरत का चेहरा भी दिखाई पड़ता है। वे देखते हैं कि अरुणा बिस्तर में पड़ी है।
उसके बाल बिखर गये हैं। वह आदित्य को एकटक देखती है।
अरुणा, तुम्हें क्या हो गया है?

सर्प ! नागबन्धु आदित्य को मार देगा।
आदित्य अरुणा को निश्चेष्ट देखकर अवाक् रह जाता है। उसकी सौम्यता नष्ट हो गई है। उसके शरीर पर आभूषण नहीं हैं। और उसके केश बिखरे हुए हैं।
राजा महेन्द्रवर्मा अरुणा की हालत सुनकर दौड़े आते हैं।
अरुणा, यह तुम्हारे विवाह का दिन है ! उठो और तैयार हो जाओ।
किसी ने इसे कुछ कर दिया है !
सावधान रहो और जब परिचारिकाएँ जग जायें, तो मुझे सूचित कर दो। मैं अभी राजा के साथ जा रहा हूँ।
जी, महोदय !
उसे हमलोग परेशान न करें। कुछ देर के बाद अपने आप ठीक हो सकती है।
ऐसी ही आशा करें।
राम सिंह, किसी को भेजकर राजगुरु और ज्योतिषी को बुला लाओ।
जी, महोदय !
जब राम सिंह चला जाता है...
आदित्य, यह निश्चित है कि विवाह आज नहीं हो सकता।
राज्याभिषेक को भी स्थगित किया जा सकता है।
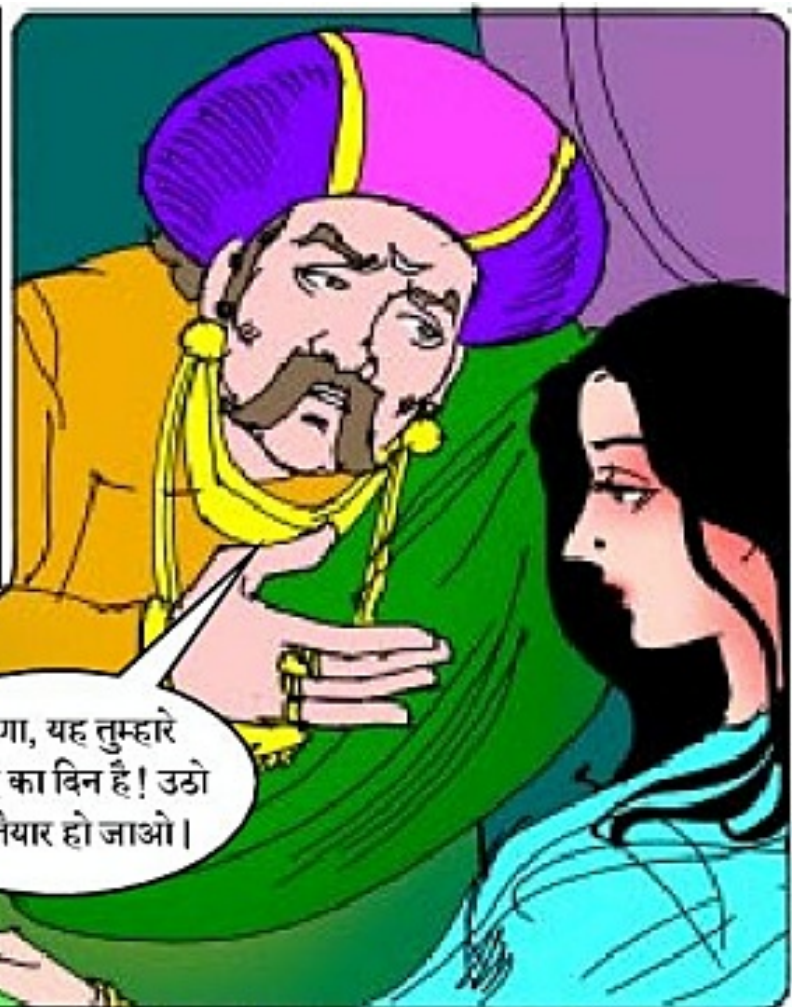
अरुणा की एक परिचारिका जग जाती है।
ओह! लगता है मैं ज्यादा देर तक सोई रही।
रेखा, उठो, कितना काम पड़ा है।
राजकुमारी क्या सोचेगी?
राजकुमारी को देखकर वे हक्का-बक्का हो जाती हैं।
वह मूर्त्तिवत् क्यों देख रही हैं?
क्षमा कीजिये, हमलोग देर तक सोते रह गये !
राजकुमारी, हमलोग क्या करें, आदेश दीजिये।
राजकुमारी कुछ उत्तर नहीं देती।
अजीब बात है !
माला रक्षक के पास जाती है।
क्या राजकुमारी जग गई हैं? मुझे राजकुमार को सूचित करना है।
हाँ, लेकिन...
माला, तुम जाओ और राजकुमार को सूचित करो
तुम कोशिश करो कि वह बोलने लग जायें।
माला को मार्ग में राम सिंह मिल जाता है।
महोदय, यहाँ क्या हो रहा है?
माला, समय बहुत कम है। विवाह स्थगित कर दिया गया है !
. विवाह को स्थगित ! लेकिन क्यों?
तुम क्या कह रही हो? माला, राजकुमारी मतिभ्रम के प्रभाव में हैं !
आदित्य को नागबन्धु मार डालेगा !!
क्रमशः

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा

आश्विन का महीना (सितम्बर-अक्तूबर) पश्चिम बंगाल में वर्ष का उच्च बिन्दु होता है, क्योंकि आश्विन में ही रँगरलियों के साथ बहुप्रतीक्षित दुर्गा पूजा पर्व का आगमन होता है।

दुर्गा पूजोत्सव की परम्परा शताब्दियों पुरानी है और भारतीय साहित्य में इसका विवरण सबसे पहले १२वीं शताब्दी में पाया जाता है। जो भी हो, जैसे-जैसे समय बीतता गया, इस उत्सव का भी विकास होता गया। पुराने जमाने में धनी जमीन्दार और व्यापारी लोग अपने घरों में पूजा करते थे और उत्सव पर सारा खर्च स्वयं करते थे। इस उत्सव में जात-पांत या गरीब-अमीर के भेदभाव के बिना अड़ोस-पड़ोस के सभी लोग भाग लेते थे। सब का स्वागत होता था और सब को विशेष भोजन दिया जाता था। लेकिन आज के लोकाचार में पूजा एक सामुदायिक कार्यक्रम बन गया है और इसका दायित्व समुदाय के लोगों ने ले लिया है। क्लबों, एसोसियेशनों तथा समितियों ने पूजा को आचरण में सार्वभौमिक रूप प्रदान कर दिया है। पूजा का सामाजिक तथा धार्मिक अनुष्ठान सम्बन्धी महत्व भी बहुत हद तक परिवर्तित कर दिया गया है। आज यह त्योहार तड़क-भड़क और आडम्बर के प्रदर्शन का अवसर बन गया है।

जबकि पहले अकेली दुर्गा की पूजा की जाती थी, आज, उनके परिवार के साथ उनकी पूजा की जाती है। दुर्गा को सर्वोच्च प्रधान के रूप में चित्रित किया जाता है तथा उनके पति शिव और बेटे गणेश तथा कार्तिकेय की उपस्थिति देवत्व का पूर्ण चित्र प्रस्तुत करती है। पूजा का कार्यक्रम तीन दिनों तक चलता है। पूरे राज्य में दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, गणेश, कार्तिकेय की विशाल मूर्त्तियों को चमचमाती रोशनी के साथ भव्य रूप से अलंकृत पंडालों में रखा जाता है। अन्तिम दिन, मूर्त्तियों को धूमधाम से सजे-सजाये वाहनों में जुलूस के साथ बिसर्जित करने के लिए ले जाया जाता है।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

प्रलय की ओर प्रयाण

आज के लोग पर्यावरण के प्रति अत्यधिक सचेत हैं। वे चाहते हैं कि उनके बच्चों को उत्तराधिकार में ''स्वस्थ घर'' मिले। इसलिए धरती को सुरक्षित रखने के लिए अनेक उपाय किये जा रहे हैं। जो भी हो, अनेक आधुनिक चमत्कार, जिन्हें कभी मनुष्य की प्रगति का प्रतीक माना जाता था, अब पर्यावरण के लिए गंभीर खतरा साबित हो रहे हैं। हमारे कारखाने, सड़कों पर दौड़ती मोटरगाड़ियाँ और अनेक विद्युत उपकरण पर्यावरण और वातावरण के प्रदूषण में प्रधान योगदान कर्त्ता हैं। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि वातावरण में कार्बन डायोक्साइड तथा अन्य ग्रीन हाउस गैसों की बढ़ती मात्रा हमें पर्यावरण सम्बन्धी भयंकर परिणामों की ओर धकेल रही है।

शोधकर्ताओं की सामूहिक खोजों के अनुसार जलवायु सम्बन्धी परिवर्तनों के कारण सन् २०५० तक करीब १५ से ३५ प्रतिशत जातियों के, जिनका अध्ययन किया गया है, विलुप्त हो जाने का खतरा है।

''विश्व स्तर पर संरक्षण की एक मात्र कार्रवाई है न्यूनीकृत उत्सर्जन तथा कार्बन पृथक्करण कार्यक्रम के लिए सम्भावित संगठनों के द्वारा तापन को कम से कम करना।''

तुम्हारा प्रतिवेश

सागर में फ्लैश लाइट

हवाईयन दुमकटा स्क्विड, जो हवाई में और उसके चारों ओर के समुद्रों में पाया जानेवाला एक रात्रिचर प्राणी है, अपनी जाति के सदस्यों से बहुत भिन्न है। विश्वास करो या न करो, इसमें एक अन्तर्निर्मित फ्लैश लाइट होता है। वह ''फ्लैश लाइट'' रक्षा का एक रचनातन्त्र है। यह स्क्विड को, परभक्षियों की छाया बनने से रोककर उनसे बचने में मदद करता है। प्रकाश का अवयव रूपहले परावर्तक पत्तरों के ढेर से बना होता है; ये पत्तर असामान्य प्रोटीन से बने होते हैं जो रिफ्लेक्टिन कहलाते हैं। ये रिफ्ले क्टिन्स दीप्तिकर जीवाणुओं के उपनिवेशों से घिरे रहते हैं। इन जीवाणुओं का स्क्विड के साथ सहजीवी का सम्बन्ध होता है। जब स्क्विड अपने प्रकाश का उपयोग करता है, तब जीवाणुओं को रहने के लिए सुरक्षित और प्रतिस्पर्धा से मुक्त पर्यावरण मिलता है। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि इस खोज से अप्राविधिक अन्वेषणों को प्रेरणा मिलेगी।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

सबसे छोटा अश्वमीन

एक घोड़ा जो समुद्र में रहता है। तुम्हें जब यह पता चले कि जिसके बारे में हमलोग बात कर रहे हैं, वह तो मामूली समुद्री घोड़ा है, तो निराश होने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी, नयी अश्वमीन प्रजाति, हिप्पोकैम्पस डिनाइज के विषय में कुछ तो है जिसे हमलोगों ने अभी तक नहीं स्पष्ट किया है। यह दुनिया का सबसे छोटा अश्वमीन है।

इस प्राणी की सबसे पहले कनाडा में क्यूबेक, मॉन्ट्रियल के मैकगिल विश्वविद्यालय तथा हवाई के होनोलुलु में बिशप अजायब घर के वैज्ञानिकों द्वारा खोज की गई। यह हिन्देशियाई समुद्र-तट से दूर फ्लोर्स सागर की गहराई में प्रवालभित्तियों में छिपा हुआ पाया गया।

यह प्राणी समुद्र तल से करीब १३-९० मीटर नीचे प्रवाल समुद्री पंखों से अपने को लंगर करने के लिए अपनी पूंछ का उपयोग करता है। थूथन से पूंछ के सिरे तक इसका आकार करीब आधा इंच होता है।

अपने भारत को जानो

इस महीने की प्रश्नोत्तरी परिवहन तथा गति से सम्बन्धित है

१. प्रथम रेलगाड़ी किस स्थान से किस स्थान तक गई? किस वर्ष?

२. उस महान देशभक्त का क्या नाम है जिसे आम तौर पर 'भारतीय पोत परिवहन का जनक' माना जाता है?

३. दिल्ली के हवाई अड्डे का क्या नाम है?

४. आधुनिक भारत का प्रथम बिमान चालक किसे माना जाता है? वह किस स्थान से किस स्थान तक बिमान ले गया? किस वर्ष?

५. यदि तुम 'शिकारा' पर सवार होना चाहते हो, तो कहाँ जाओगे?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

MAHANTESH C. MORABAD

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए। सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा।

बधाइयाँ

कुमारी अनुष्का
द्वारा, बी.पी.सिंह
४२८, फेथफुल गंज
कैण्ट, कानपुर-२०८००४.

विजयी प्रविष्टि

प्रथम चित्रः खेलें झूलें संग सहेली

द्वितीय चित्रः मेहनत करती एक अकेली

अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी के उत्तरः

१. बम्बई से थाने तक, सन् १८५३ में।

२. प्रसिद्ध उद्योगपति जे.आर.डी.टाटा; बम्बई से कराची; सन् १९३२ में।

३. इन्दिरा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा।

४. वी.ओ.चिदम्बरम पिल्लई।

५. श्रीनगर, कश्मीर, डल झील पर।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

पेट्रोल की बचत का रहस्य

एक कार निर्माता द्वारा आयोजित यह एक अनोखी कार दौड़ थी। प्रतियोगियों को सीटी रेलवे स्टेशन से हवाई अड्डे तक अपने मनपसन्द मार्ग से कम्पनी की बिलकुल नवीनतम कार को चलाकर ले जाना था। विजेता का निर्णय इस आधार पर नहीं होना था कि कौन पहले गन्तव्य पर पहुँचता है। प्रतियोगिता में इस बात का निर्णय होना था कि कैन कम से कम पेट्रोल खर्च करता है। राम और गोविन्द अन्तिम चरण के प्रतियोगी थे। रेलवे स्टेशन से हवाई अड्डे तक एक मुख्य मार्ग था। किन्तु उस मार्ग पर अनेक ट्रैफिक सिगनल थे। अनेक घुमावदार गलियों से होकर कई वैकल्पिक मार्ग थे जिनकी दूरी कम थी औ र ट्रैफिक सिगनल भी नहीं थे। गोविन्द सभी छोटे मार्गों से परिचित था। राम ने मुख्य मार्ग का अ नुसरण किया। जैसी की आशा थी, गोविन्द गन्तव्य पर पहले पहुँच ा। जो भी हो, सबको आश्चर्य हुआ जब र ाम को विजेता घोषित किया गया, क्योंकि उसने कम पेट्रोल खर्च किया था जबकि वह लम्बे मार्ग से गया था।

पुरस्कार लेते समय राम ने समझाया: ''छोटे मार्ग से हमेशा पेट्रोल की बचत नहीं होती। यद्यपि गोविन्द ने कम दूरी तय की, उसे अलग-अलग गलियों से जाते समय अनके बार मुड़ना पड़ा। हर बार उसे चाल धीमी करनी पड़ी, ब्रेक और क्लच दबाना पड़ा और गियर बदलना पड़ा। इससे इंजिन की शक्ति नष्ट हुई और अधिक पेट्रोल खर्च हुआ। दूसरी ओर, मुख्य मार्ग पर मैंने अन्तिम गियर में एक समान गति से गाड़ी चलाई जहाँ न मुझे क्लच और ब्रेक दबाना पड़ा और न गियर बदलना पड़ा। प्रत्येक ट्रैफिक सिगनल पर मैंने इंजिन बन्द कर दिया। इसलिए यद्यपि मुझे ज़्यादा समय लगा, फिर भी आखिरकार मैं अधिक पेट्रोल की बचत कर सका।''

अन्य घटकों के एक समान होते हुए आखिर, गाड़ी चलाने का अच्छा अभ्यास और मार्ग का चुनाव ही पेट्रल की खपत का निर्धारण करते हैं।

CHANDAMAMA (Hindi) OCTOBER 2006
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57. Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08